Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ
تِلْقَاءَ أَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ

(सूरः आराफ़ : 48)

अनुवाद : और जब उनकी निगाहें अग्नि गामियों की ओर फेरी जाएँगी तो वे कहेंगे हे हमारे रब हमें ज़ालिम लोगों में से न बनाना।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 34-35

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

26 मोहर्रम- 4 सफ़र 1444 हिज्री कमरी, 25 ज़हूर- 1तबूक 1401 हिज्री शम्सी, 25 अगस्त 1-सितम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शराब का व्यापार भी हराम क़रार दिया

(2083) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया लोगों पर एक ऐसा ज़माना ज़रूर आएगा कि आदमी माल लेने में इस की परवाह नहीं करेगा कि वह हलाल से है, या हराम से।

(2084) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, उन्होंने कहा जब सूरः बक़रा की आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद में पढ़ कर उन्हें सुनाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शराब का व्यापार भी हराम क़रार दिया।

हज़रत ख़बाब रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साबित क़दमी

(2091) हज़रत ख़बाब रज़ियल्लाहु अन्हु (बिन अर्त) से रिवायत है कि मैं ज़माना-ए-जाहेलीयत में लोहारे का काम करता था और आस बिन वायल के ज़िम्मा मेरा क़र्ज़ था। मैं उसके पास क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने के लिए गया। उसने कहा मैं उस वक़्त तक तुम्हें नहीं दूंगा जब तक कि तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इनकार न करे। मैंने कहा अल्लाह तुझे मार कर ज़िंदा कर दे तो भी मैं इंकार नहीं करूँगा। उसने कहा अच्छा। उस समय तक मुझे रहने दो कि मैं मर जाऊं और फिर ज़िंदा किया जाऊं। तब जो माल और औलाद मुझे (वहां) मिलेगी। मैं (उस से) तेरा क़र्ज़ अदा करदूंगा।

(बुख़ारी,भाग 4, किताबुल बियू, मुद्रित 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

काश दुनिया को मालूम होता कि रूह की लज़्ज़त किस चीज़ में है और फिर वह मालूम करती कि वह क़ुरआन शरीफ़ और केवल क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मैं देखता हूँ कि इस वक़्त दुनिया की तवज्जा अस्थाई ज्ञान की तरफ़ बहुत झुकी हुई है और मग़रिबी रोशनी ने संसार को अपनी नई ईजादों और उद्योगों से हैरान कर रखा है। मुस्लमानों ने भी अगर अपनी सफ़लता और बेहतरी की कोई राह सोची, तो बदक़िस्मती से यह सोची है कि वे मग़रिब के रहने वालों को अपना इमाम बना लें और यूरोप के अनुकरण पर गर्व करें। यह तो नई रोशनी के मुस्लमानों का हाल है जो लोग पुराने फ़ैशन के मुस्लमान कहलाते हैं और अपने आपको धर्म के समर्थक समझते हैं, उनकी सारी उम्र की मेहनत का ख़ुलासा और सारांश यह है कि केवल व्याकरण के झगड़ों और उलझाव में फंसे हुए हैं और ज़ालीन के शब्द पर मर मिटे हैं। क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ बिल्कुल तवज्जा ही नहीं और हो क्योंकर जबकि वे नफ़्स की पवित्रता की ओर मुतवज्जा नहीं होते।

हाँ अगर एक गिरोह ऐसा भी है जो तज़किया नफ़्स के दावे करता है, वे सूफ़ियों और सज्जादा नशीनों का गिरोह है, परन्तु उन लोगों ने क़ुरआन शरीफ़ को तो छोड़ दिया है और अपने ही तरीक़ धारण कर लिए हैं। कोई चिल्ला कशियाँ करता है। कोई لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के नारे मारता है। कोई साक्ष्य के इंकार, तवज्जा, हब्स दम इत्यादि में ग्रस्त है। उद्देश्य ऐसे तरीक़ निकाले हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित नहीं होते और न क़ुरआन शरीफ़ का यह उद्देश्य है और न कभी नबुव्वत ने ऐसे तरीक़ों को पसंद किया। उद्देश्य यह याद रखना चाहिए कि जब तक इन्सान एक पाक तबदीली नहीं करता और नफ़्स का तज़किया नहीं करता, क़ुरआन शरीफ़ के मआरिफ़ और ख़ूबियों पर इत्तिला नहीं मिलती। क़ुरआन शरीफ़ में वे नुकात और हक़ायक़ हैं जो रूह की प्यास को बुझा देते हैं।

काश दुनिया को मालूम होता कि रूह की लज़्ज़त किस चीज़ में है और फिर वह मालूम करती कि वह क़ुरआन शरीफ़ और सिर्फ क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है।

(मलफ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 385 मुद्रित क़ादियान 2018 ई.)

★ ★ ★

मु'आहदात (शपथपूर्वक की हुई प्रतिज्ञा) की पाबंदी क़ौमी एकता के क़ियाम के लिए अशद ज़रूरी होती है

अतः चाहिए कि इन्सान जिस तरह भी हो सके अपने वादों को पूरा करे ताकि विश्वास क़ायम हो और लोग प्रसन्नता और रुचिपूर्वक एक दूसरे की इमदाद के लिए तैयार हों और क़ौम तरक़्क़ी कर सके

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः नहल आयत : 93

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ
اَنْكَاثًا تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ
اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ
وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ○

तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत को एक नया मज़मून भी क़रार दिया जा सकता है और पिछली आयत के मज़मून का तसलसुल भी क़रार दिया जा सकता है। यदि पहली आयत के मज़मून को ही जारी समझा जाए तो इसके अर्थ ये होंगे कि आपस के समझोतों को पूरी तरह से निभाओ । अगर तुम इन अहदों को तोड़ो गे तो ख़ुदा तआला ने जो तुम्हारी मज़बूत जमाअत बना दी है वह तबाह हो जाएगी और आपस का एतबार जाता रहेगा।

मुआहिदात की पाबंदी क़ौमी इत्तेहाद के क़ियाम के लिए अशद ज़रूरी होती है क्योंकि जमाअत का क़ियाम एक दूसरे से हुस्न-ए-सुलूक पर मबनी होता है और हुस्न-ए-सुलूक उस वक़्त तक रहता है जब तक लोग मुआहिदात की पाबंदी करें। जब लोग मुआहिदात पूरे न करें तो पहले बददिली और इसके बाद बदज़नी पैदा होजाती है और एक शख़्स के बुरे अमल के नतीजा में दूसरे सैंकड़ों आदमी क़ौमी निज़ाम के फ़वायद से वंचित रह जाते हैं। अतः चाहिए कि इन्सान जिस तरह भी हो सके अपने वादों को पूरा करे ताकि एतबार क़ायम हो और लोग प्रसन्नता और रुचिपूर्वक एक दूसरे की सहायता के लिए तैयार हों और क़ौम तरक़्क़ी कर सके।

इन्फ़िरादी अह्द के इलावा एक क़ौमी अह्द भी होता है अर्थात अफ़राद एक शख़्स के हाथ पर क़ौमी तरक़्क़ी के लिए अह्द करते हैं जिसका नाम ख़िलाफ़त है। वे अह्द भी इस के अंदर शामिल है और इस आयत में इस की तरफ़ भी इशारा पाया जाता है। फ़रमाता है कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारी एक जमाअत बना दी है और एक निज़ाम क़ायम कर दिया है और

शेष पृष्ठ 11पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जुमअःतुल मुबारक़ के दिन क़बूलियत-ए-दुआ की ख़ास घड़ी का कौन सा वक़्त है? जलसा सालाना यू.के 2019 ई. के आख़िरी दिन के ख़िताब में नमाज़ तरावीह में पूरा सिपारा पढ़ने के बजाय छोटी सूरतें पढ़ने के बारे में हुज़ूर अनवर के इरशाद के बारे में मज़ीद वज़ाहत

विधवा के सोग तथा बाक़ी लोगों के सोग वशेषता भाई की वफ़ात पर बहन के सोग के बारे में इस्लामी आदेश क्या हैं? क्या अकेली औरत हज पर जा सकती है?

एक मोमिन के लिए हमेशा भलाईयां ही आती हैं लेकिन दूसरी तरफ़ यह भी है कि यह दुनिया मोमिन के लिए जहन्नुम है। इस में कौन सी बात ठीक है? तथा यह कि क्या यह दरुस्त है कि अगर एक नमाज़ रह जाए तो पिछली चालीस साल की नमाज़ें ज़ाए हो जाती हैं?

मुरब्बियान सिलसिला किस तरह हुज़ूर अनवर के सुलताने नसीर बन सकते हैं?

सर्दीयों में तो इन्सान आसानी से तहज्जुद के लिए उठ सकता है लेकिन मुस्तक़िल तौर पर और उन देशों में गरमियों में इसकी आदत डालने का बेहतरीन तरीका क्या है?

देखने में आता है कि नौजवान नसल का ज़्यादा वक़्त बाहर के समाज के प्रभाव में गुज़रता है, उन्हें हम जमाअत के क़रीब कैसे ला सकते हैं?

कुछ दूसरी कौमें जो जमाअत में शामिल हो रही हैं, वे जमाअत के ज्ञान से तो बहुत प्रभावित होती हैं लेकिन जमाअती निज़ाम और विशेषता माली क़ुर्बानी में वे पूरी तरह शामिल नहीं हो पाते और मुक़ामी जमाअत के साथ भी उनके मज़बूत राबते नहीं हो पाते, इस बारे में हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में राहनुमाई की दरख़ास्त है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त-20) भाग -2

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक मुरब्बी साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ने शुरू में नमाज़ तहज्जुद का वर्णन फ़रमाया है। सर्दीयों में तो इन्सान आसानी से तहज्जुद के लिए उठ सकता है लेकिन मुस्तक़िल तौर पर और उन देशों में गरमियों में इस की आदत डालने का बेहतरीन ज़रीया क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : यह तो depend करता है कि कितना अल्लाह तआला से आपका ताल्लुक़ है। कितनी अल्लाह से मुहब्बत है। बाक़ी कामों के लिए वक़्त निकाल लेते हैं नाँ? अगर जर्मनी में रहते हुए रात को दस बजे इशा की नमाज़ होती है या साढ़े दस बजे होती है और सुबह ढाई बजे, पौने तीन बजे या तीन बजे होती है। (यहां बल्कि यू.के में इस से जल्दी सहरी हो जाती है। वहां फिर एक घंटा लेट सहरी होती है। आधा पोना घंटे का अंतर होता है। तो दो घंटे सोएँ, डेढ़ घंटा सोएँ। फिर उठके नमाज़ पढ़ें। इस के बाद नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद फिर एक दो घंटे सो जाएं। यह तो अपना प्रोग्राम ख़ुद बनाना पड़ता है। अगर किसी काम के करने की दिल में तड़प हो तो सब रस्ते निकल आते हैं। जब जामिआ में आपके इमतेहान हो रहे होते थे और पढ़ने का शौक़ होता था तो रात को उठ के पढ़ते थे नाँ? या कोई फ़िक्र पैदा हुई हो तो तहज्जुद पढ़ते हैं नाँ? यह तो सोच की बात है। अगर आप सोच को इस तरह ढाल लेंगे कि मैंने यह काम करना है तो अल्लाह तआला मदद करता है। तो लोग तो रात को घंटा डेढ़ घंटा सोते हैं। इस के बाद उठ के तहज्जुद पढ़ लेते हैं। फिर सुबह नमाज़ फ़जर के बाद जब बाक़ी वक़्त हुआ सो गए। यह तो वक़्त निकालना पड़ता है। इस के बाद सारा दिन भी तो आपको मिल जाता है। दोपहर को नींद पूरी करने के लिए एक घंटा सो लिया करें। यह तो कोई ऐसा मसला नहीं है। जवानी में ही इबादत होती है जो होती है। आप तो नौजवान लोग हैं आप लोगों का ही वक़्त है। यही वक़्त है इस वक़्त से लाभ उठा लें। और इबादात का जितना हक़ अदा कर सकते हैं करने की कोशिश करें।

दर जवानी तौबा कर दिन शेवा-ए-पैग़ंबरी
वक़्त-ए-पीरी गर्ग ज़ालिम मी शवद परहेज़गार

प्रश्न: इसी मुलाक़ात में एक मुरब्बी साहिब ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि देखने में आता है कि नौजवान नसल का ज़्यादा वक़्त बाहर के समाज के अधीन गुज़रता है, उन्हें हम जमाअत के क़रीब कैसे ला सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : तो ठीक है नौजवान मुरब्बियान जो हैं यह उनका काम है। आप लोग यहीं पले हैं, यहीं बढ़े हैं, यहीं आप ने ग्रेजुएशन की है या जो भी तालीम हासिल की है, सैकण्डरी स्कूल की जो तालीम हासिल की या abitur किया या जो भी किया तो आप लोगों को इस माहौल का पता है। आप भी यहां रहते हैं। इसके मुताबिक़ देखें कि किस तरह उन लोगों की तर्बीयत कर सकते हैं। और इसी लिए मैं कहता हूँ कि द्सोतियाँ बनाएँ, इसी लिए ज़ेली तंज़ीमें भी हैं। ज़ेली तन्ज़ीमों का भी काम है कि अपने लड़कों को अपने साथा involve करें। और नौजवान मुरब्बियान जितने भी हैं उनका काम है कि उनकी मदद करें। इस तरह करेंगे तो इन शा अल्लाह तआला ठीक हो जाएगा। यह तो कोशिश है, ठीक है माहौल यह है। माहौल ही तो हमारे लिए चैलेंज है। इस माहौल में ही हमने उनके हालात के मुताबिक़ कोशिश करनी है। कोई नई चीज़ तो नहीं है, कोई नया फ़ार्मूला तो नहीं ऐसा बन जाएगा कि आप उसको अप्लाई करेंगे तो सारे लोगों की इस्लाह हो जाएगी और वे वलीउल्लाह बिन जाऐंगे, कोई नहीं बनेगा। न एक दिन में आप लोग अपने टार्गेट achieve कर सकते हैं। यह तो एक मुसलसल कोशिश है ताकि उनका जमाअत के अफ़राद के साथ ताल्लुक़ पैदा रहे और उनको यह एहसास होता रहे कि हाँ हमारी एक और ज़िम्मेदारी भी है कि जो हमने दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने का अह्द किया हुआ है उसको भी हमने पूरा करना है। यह एहसास आहिस्ता-आहिस्ता दिलाते रहें। आपकी तन्ज़ीमों का अफ़राद जमाअत से या ज़ेली तन्ज़ीमों के मैंबरान जो हैं , ख़ुद्दाम से, लजना से, अंसार से, उनका जितना राबिता होगा, उतना ज़्यादा असर होगा। मुरब्बियान उनसे ताल्लुक़ रखने का अपने आपको जितना ज़्यादा वक़्त देंगे उतना ज़्यादा असर होगा। यह तो एक मुसलसल कोशिश है और यह जारी रखनी है। इस के लिए कोई hard and fast फ़ार्मूला नहीं बनाया जा सकता। हर एक के हालात के मुताबिक़, हर एक शख़्स की नफ़सियात के मुताबिक़ ये फ़ैसले करने होंगे। और आप नौजवान मुरब्बियान पर यही trust किया गया है कि आप लोग जो वहां के पढ़े लिखे हैं वे ज़्यादा बेहतर तौर पर यह तर्बीयत का काम कर सकते हैं। अगर आपकी अपनी तर्बीयत सही हो जाएगी और जैसा कि मैंने शुरू में कह दिया था कि ताल्लुक़ बिल्लाह पैदा हो जाएगा

शेष पृष्ठ 11 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जंग ज़ात-ए-सलासिल में मुस्लमानों की फ़तह की एक बड़ी वजह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वह पालिसी भी थी जो उन्होंने इराक़ के काश्तकारों के बारे में स्वरूप की थी और जिस पर ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सख़्ती से अमल किया था, इस पालिसी के तहत उन्होंने काश्तकारों से खुला विरोध नहीं किया

जहां-जहां वे आबाद थे उन्हें वहीं रहने दिया और टैक्स की मामूली रक़म के सिवा और किसी किस्म का तावान या टैक्स उनसे वसूल किया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बाबरकत दौर में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 जुलाई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जैसा कि मैं ने पिछले जुमा में बताया था कि आज हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-अखिलाफ़त्त में ईरानियों के ख़िलाफ़ कार्यवाईयों का वर्णन होगा। इस सिलसिला में एक जंग-जो हुई उसे जंग ज़ात-ए-सलासिल या जंग-ए-काज़मा कहते हैं। ये जंग मुहर्रमुल हराम 12 हिज्री में हुई। ये जंग तीन नामों से जानी जाती है। जंग ज़ात-ए-सलासिल, जंग-ए-काज़मा और जंग-ए-हफ़ीर। इस जंग को ज़ात-ए-सलासिल अर्थात ज़ंजीरों वाली जंग इसलिए कहा जाता है कि अरबी में सलासिल ज़ंजीर को कहते हैं जिसकी जमा सलासिल है। क्योंकि इस जंग में ईरानी फ़ौज ने अपने आपको एक दूसरे के साथ ज़ंजीरों में जकड़ लिया थाता कि कोई शख़्स जंग से भागने नहीं पाए। जंग ज़ात-ए-सलासिल की इस रिवायत को कुछ इतिहासकार स्वीकार नहीं करते। ये जंग मुस्लमानों और ईरानियों के मध्य काज़मः स्थान के क़रीब लड़ी गई थी इसलिए उसे जंग-ए-काज़मा के नाम से भी मौसूम करते हैं। काज़मा बस्रा से बेहरीन जाते हुए समुद्र सैफुल बहर पर एक बस्ती है।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ उस्ताज़ उम्र अबू नसर पृष्ठ : 664)(माख़ूज़ अज़ कामिल फ़ील तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 239 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)(अबू बकर सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु, अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपति, पृष्ठ 272 इल्मो इरफ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 4, पृष्ठ 488)

हफ़ीर इलाक़ा में होने की वजह से इस जंग को जंग-ए-हफ़ीर भी कहा जाता है।

(अल् सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 127 मुसन्निफ़ा प्रोफ़ैसर अली मुहसिन सिद्दीक़ी)

मुस्लमानों की तरफ़ से इस जंग के सिपहसालार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु थे और ईरानियों की जानिब से सिपहसालार का नाम हुरमज़ था। मुस्लमानों के लश्कर की संख्या अठारह हज़ार थी।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ, 309 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत 2012 ई.)

जैसा कि पिछले ख़ुतबात में वर्णन हो चुका है कि हुर्मुज़ ईरानियों की जानिब से इस इलाक़े का हाकिम था जो हसब-ओ-नसब और शरफ़ और इज़्ज़त में अक्सर उमरा-ए-ईरान से बढ़ा हुआ था। ईरानी सम्मानित लोगों की की आदत थी कि वे मामूली टोपियों के बजाय क़ीमती टोपियां पहनते थे और हसब-ओ-नसब और शरफ़-ओ-इज़्ज़त में जो शख़्स जिस मर्तबे का होता था उसी मुनासबत से क़ीमती टोपी पहनता था। सबसे बेशक़ीमत टोपी कहा जाता है कि एक लाख दिरहम की होती थी जिसे वही शख़्स पहन सकता था जो शरफ़-ओ-इज़्ज़त और सम्मान और प्रतिष्ठा में उच्च श्रेणी पर पहुंचा हुआ हो और हुर्मुज़ के मर्तबे का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है कि उसकी टोपी की क़ीमत भी एक लाख दिरहम थी।

ईरानियों के नज़दीक तो इसकी वजाहत साबित थी लेकिन इराक़ की हदूद में बसने वाले अरबों में उसको नफ़रत की निगाह से देखा जाता था क्योंकि वे इन अरबों पर समस्त सरहदी उमरा से ज़्यादा सख़्ती और ज़ुलम करता था। अरबों की नफ़रत इस हद तक पहुंची हुई थी अर्थात ग़ैर मुस्लमान अरब जो थे कि वे किसी शख़्स की ख़बासत का वर्णन करते हुए हुर्मुज़ का नाम बतौर लोकोक्ति के लेने लगे थे। इसलिए कहते थे कि अमुक शख़्स तो हुर्मुज़ से भी ज़्यादा ख़बीस है। अमुक हुर्मुज़ से भी ज़्यादा बद फ़ितरत और बुरे आचरण वाला है। अमुक शख़्स हुर्मुज़ से भी ज़्यादा एहसान फ़रामोश है। और इसी वजह से हुर्मुज़ को अरबों के पै दर पै छापों और झड़पों का भी सामना करना पड़ता था और दूसरी तरफ़ हुर्मुज़ की झड़पें हिंदुस्तान के समुद्री लुटेरे से भी होती रहती थीं। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु, हिज़्क़ील, अनुवादक, पृष्ठ 269-270)

बहरहाल हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यमामा से रवानगी से पूर्व हुर्मुज़ को ख़त लिखा था। उन्होंने अपने ख़त में लिखा कि अम्मा बाद फ़रमांबर्दारी इख़्तेयार कर लो, तुम महफ़ूज़ रहोगे या अपनी और अपनी क़ौम के लिए हिफ़ाज़त की ज़मानत हासिल कर लो और टैक्स देने का इक़रार करो अन्यथा तुम अपने आपके सिवाए किसी और को निन्दा नहीं कर सकोगे।

मैं तुम्हारे मुक़ाबले के लिए ऐसी क़ौम को लाया हूँ जो मौत को यूं पसंद करती है जैसे तुम ज़िंदगी को पसंद करते हो।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 309 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)

जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त हुर्मुज़ के पास पहुंचा तो उसने किसरा के बादशा को इस की सूचना दी और अपनी फ़ौजें जमा कीं और एक तेज़ रो दस्ते को लेकर फ़ौरन हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले के लिए काज़मा पहुंचा और अपने घोड़ों से आगे बढ़ गया परन्तु उसने इस रास्ते पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं पाया और इस को यह इत्तिला मिली कि मुस्लमानों का लश्कर हफ़ीर में जमा हो रहा है। इसलिए पलट कर हफ़ीर की तरफ़ रवाना हुआ। हफ़ीर बस्रा से मक्का की तरफ़ जाते हुए पहली मंज़िल थी। वहां पहुंचते ही अपनी फ़ौज की सफ़-आराई की। हुर्मुज़ ने अपने दाएं बाएं दो भाईयों को निर्धारित किया। उनमें से एक का नाम क़ुबाज़ और दूसरे का नाम अनु शजान था। ईरानियों ने अपने आपको ज़ंजीरों में जकड़ लिया था। इस रिवायत में तो यही वर्णन हुआ है और यह कहा जाता है कि इस पर वे लोग जिनकी राय उसके ख़िलाफ़ थी जब उन्होंने यह मंज़र देखा तो कहा कि तुम लोगों ने दुश्मन के लिए ख़ुद ही अपने आपको ज़ंजीरों में जकड़ लिया है। ऐसा न करो। यह बुरा फ़ाल है। इस का उन्होंने जवाब दिया जो इस हक़ में थे कि ज़ंजीरों से जकड़ा जाए कि तुम्हारे विषय में हमें इत्तिला मिली है कि तुम भागने का इरादा रखते हो। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को हुर्मुज़ के हफ़ीर पहुंचने की इत्तिला मिली तो आप अपने लश्कर को लेकर काज़मा की तरफ़ मुड़ गए।

हुर्मुज़ को इस का पता चल गया तो वह फ़ौरन काज़मा की तरफ़ रवाना हुआ और वहां पड़ाव किया। हुर्मुज़ और उसके लश्कर ने सफ़-आराई की और पानी पर उनका क़बज़ा था। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उनको ऐसे मुक़ाम पर उतरना पड़ा जहां पानी नहीं था। लोगों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उसकी शिकायत की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुनादी ने ऐलान किया कि सब लोग उतर पढ़ें और सामान नीचे उतार लें और दुश्मन से पानी के लिए लड़ाई करें क्योंकि बख़ुदा पानी पर उसी जमाअत का क़बज़ा होगा जो दोनों गिरोहों में से ज़्यादा साबित-क़दम रहेगी और दोनों लश्करों में ज़्यादा मुअज़्ज़िज़ होगी। इस पर सामान उतार लिया गया। सवार फ़ौज अपनी जगह खड़ी रही। पैदल फ़ौज ने पेशक़दमी की और दुश्मन पर हमला-आवर हुई। दोनों तरफ़ लड़ाई शुरू हुई तो अल्लाह ने एक बदली भेजी। मुस्लमानों की सफ़ों के पीछे बारिश हुई। मुस्लमानों को इस से क़ुव्वत मिली। हुर्मुज़ ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए एक साज़िश तैयार की। उसने अपने दिफ़ाई दस्ते से कहा कि मैं हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को मुबारिज़त की दावत देता हूँ और इस दौरान कि मैं उनको अपने साथ मसरूफ़ रखूँगा तुम लोग अचानक चुपके से हज़रत ख़ालिद पर हमला कर देना। इसके बाद हुर्मुज़ मैदान में निकला। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु आपने घोड़े से

उतर पड़े। हुर्मुज़ भी अपने घोड़े से उतरा और उसने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को मुक़ाबले की दावत दी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु चल कर उसकी तरफ़ आए और दोनों में मुक़ाबला हुआ। दोनों तरफ़ से वार होने लगे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुर्मुज़ को भींच लिया। इस पर हुर्मुज़ के दिफ़ाई दस्ते ने ख़ियानत से काम लेते हुए हज़रत ख़ालिद ऊपर हमला कर दिया और उन्हें घेरे में ले लिया। जब इस तरह एक एक की लड़ाई हो रही हो तो फिर दूसरे हमला नहीं करते लेकिन बहरहाल उनकी फ़ौज ने इन पर हमला कर दिया। इस के बावजूद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुर्मुज़ का काम तमाम कर दिया।

हज़रत काका बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जैसे ही ईरानियों की यह ख़ियानत देखी तो हुर्मुज़ के दिफ़ाई दस्ते पर हमला कर दिया और उन्हें घेरे में लेकर मौत की नींद सुला दिया। ईरानियों को शिकस्त फ़ाश हुई और वे भाग गए। भागने वालों में क़ुबाज़ और अनू शुजान भी थे। मुस्लमानों ने रात के अंधेरे में ईरानियों का पीछा किया और दरयाए फ़ुरात के बड़े पुल तक जहां आजकल बस्रा आबाद है उन्हें क़तल करते चले गए। जंग के इख़ततताम पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने माल-ए-ग़नीमत जमा किराया। इस में एक ऊंट के बोझ के बराबर ज़ंजीरें भी थीं। उनका वज़न एक हज़ार रतल था यानी ज़ंजीरों का तक़रीबन तीन सौ पचहत्तर किलो। जो माल-ए-ग़नीमत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ भेजा गया इस में हुर्मुज़ की एक टोपी भी थी जिसकी क़ीमत एक लाख दिरहम थी और वह जवाहरात से लदी हुई थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह टोपी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़र्मा दी थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़तह की ख़ुशख़बरी, माल-ए-ग़नीमत में से ख़ुमुस और एक हाथी मदीना रवाना किया और हर तरफ़ इस्लामी लश्कर की फ़तह का ऐलान कर दिया। ज़िर बिन कुलैब ख़ुमुस और हाथी को लेकर मदीना पहुंचे। अहल मदीना को इस से पूर्व हाथी देखने का कभी संयोग नहीं हुआ था। मदीना वालों का तो वर्णन ही किया, अरब के किसी और बाशिंदे ने भी अबराह के हाथियों के सिवा आज तक हाथी की सूरत नहीं देखी थी। जब लोगों को दिखाने के लिए इस को सारे शहर में गशत किराया गया तो बूढ़ी औरतें इस हाथी को देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुईं और कहने लगीं जो हम देख रही हैं क्या यह ख़ुदा की तख़लीक़ में से है? वे ये समझें कि कोई बनावटी चीज़ है। इस हाथी को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़िर्र के साथ ही हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास वापस भेज दिया।(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 309 - 310 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.) (सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी, पृष्ठ 405-404) (हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ हैकल, पृष्ठ 271 से 273) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2, पृष्ठ 319-दारुल क़ुतुब इल्मिया , बेरूत, लुबनान)(लुगात हदीस ज़ेर लफ़्ज़ رَطْل, भाग 2, पृष्ठ 121)

इस जंग में मुस्लमानों की फ़तह की एक बड़ी वजह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वह पालिसी भी थी जो उन्होंने इराक़ के काश्तकारों के बारे में वज़ा की थी और जिस पर ख़ालिद ने सख़्ती से अमल किया था। इस पालिसी के तहत उन्होंने काश्तकारों से खुला विरोध नहीं किया। जहां-जहां वे आबाद थे उन्हें वहीं रहने दिया और टैक्स की मामूली रक़म के सिवा और किसी किस्म का तावान या टैक्स उनसे वसूल नहीं किया। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हैकल, पृष्ठ 272- अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानी पत्ती इल्मो इरफ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

मार्का ज़ातुस्स्लासिल में जंग में शामिल होने वाले सवार को एक हज़ार दिरहम का हिस्सा दिया गया और पैदल को इसका एक तिहाई दिया गया। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 311 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)

जंग काज़िमह लम्बे समय के परिणाम का हामिल साबित हुई।

इस लड़ाई ने मुस्लमानों की आँखें खोल दीं और उन्होंने देख लिया कि वे ईरानी जिनकी शान का शहरा एक अरसा से सुनने में आ रहा था अपनी पूरी ताक़त के बावजूद उनकी मामूली फ़ौज के मुक़ाबले में भी नहीं ठहर सके। इस जंग में माल-ए-ग़नीमत की जो मिक़दार उनके हाथ लगी उसका वह तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हैकल, पृष्ठ 272 अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपती इल्मों इराफान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

फिर जंग उब्ल्लाह का वर्णन है जो बारह हिज्री में लड़ी गई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को हिदायत की थी कि वह इराक़ में जंग का आग़ाज़ उब्ल्लाह से करें जो ख़लीज-ए-फारिस पर एक सरहदी मुक़ाम था। हिन्दुस्तान और सिंध को जो व्यापारी क़ाफ़िले इराक़ से आते थे सबसे पहले उबुल्लह में क़ियाम करते थे। उबुल्लह की फ़तह के सम्बन्ध में दो रिवायतें वर्णन हैं। एक यह कि मुस्लमानों ने उबुल्लह को सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में फ़तह किया लेकिन बाद में यह दुबारा ईरानियों के क़बज़ा में चला गया और हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब के ज़माने में मुस्लमान इस पर पूरी तरह क़ाबिज़ हुए। दूसरी रिवायत यह है कि इस की फ़तह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में हुई। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैकल, पृष्ठ 269)

बहरहाल अल्लामा तिब्री ने अपनी किताब में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर ख़िलाफ़त में इस जंग का संक्षिप्त वर्णन किया है जबकि उस के बाद वे यह लिखते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर ख़िलाफ़त में उबुल्ला की फ़तह का क़िस्सा आम सीरत निगारों और सही रिवायत के ख़िलाफ़ है क्योंकि उबुल्ला की फ़तह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में चौदह हिज्री में हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान के हाथ से अमल में आई थी। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2, पृष्ठ 310 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2012 ई.)

तारीख़ की और किताबों में जंगे उबुल्लह का वर्णन इस तरह आया है। कुछ इतिहासकारों ने उसको पहली बार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द मुबारक में होना वर्णन करते हैं और कुछ उसका खंडन करते हैं कि ये जंग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में नहीं बल्कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में हुई थी लेकिन कुतुब तारीख़ में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और दोनों के अह्द मुबारक में जंग उबुल्लह और उबुल्लह की फ़तह का वर्णन मिलता है। मालूम यह होता है कि उसकी पहली बार फ़तह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पवित्र समय में हुई थी लेकिन बाद में ईरानियों की बहरी इमदाद के बलबूते पर अहल-ए-उबुल्लह ने बग़ावत करके आज़ादी हासिल कर ली। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द मुबारक में ये दुबारा फ़तह हुआ। (अल् सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु , परोफ़ेसर अली मुहसिन पृष्ठ 128)

बहरहाल उबुल्ला की जंग की तफ़सील कुछ इस प्रकार है जंग ज़ाते सलासिल के अंत पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुसन्ना को ईरानियों के शिकस्त ख़ूर्दा लश्कर के पीछे भेजा और साथ ही हज़रत माकल रज़ियल्लाहु अन्हु को उबुल्लह भेजा कि वहां पहुंच कर माल-ए-ग़नीमत जमा कर लें और क़ैदियों को गिरफ़्तार कर लें। इसलिए माक़ल वहां से रवाना हो कर उबुल्लह पहुंचे और माल-ए-ग़नीमत और क़ैदी जमा कर लिए। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2, पृष्ठ 310)

बाद में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद-ए-मुबारक में इस की फ़तह की तफ़सील कुछ इस प्रकार है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अतबा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हु को चौदह या सोला हिज्री में बस्रा की तरफ़ रवाना फ़रमाया। हज़रत उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु वहां एक महीना रहे। अहले उबुल्ला उनके मुक़ाबले के लिए निकले। यह पाँच सौ अजमी सिपाही थे जो उबुल्ला की हिफ़ाज़त पर मामूर थे। हज़रत उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों से लड़ाई की और उन्हें शिकस्त दी यहां तक कि ईरानी शहर के अंदर घुस गए और हज़रत उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लश्कर में लौट आए। अल्लाह ने फ़ारसियों के दिल में रोब डाल दिया, वे शहर से निकल गए और थोड़ा बहुत सामान लेकर कश्तियों में बैठे और दरिया पार करके चले गए। इस तरह पूरा शहर ख़ाली हो गया। मुस्लमान शहर में दाख़िल हो गए यहां पर मुस्लमानों को काफ़ी सामान हथियार और अन्य मुख़्तलिफ़ चीज़ें हाथ आएं और क़ैदी भी मिले। इस सारे सामान का पांचवा भाग निकाल कर बाक़ी माल-ए-ग़नीमत मुजाहेदीन में तक़सीम कर दिया गया। मुस्लमानों की संख्या तीन सौ थी।

(उद्धरित अल् कामिल फ़ील तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 335 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

फिर एक जंग मज़ादर है। जंग मज़ादर यह मार्का सिफ़र बारह हिज्री में हुआ। जंग बारह हिज्री में लड़ी गई।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 311दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

मज़ार मेसार का क़स्बा है। मज़ार और बस्रा के मध्य चार दिन की मुसाफ़त के

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बराबर दूरी है।

(मोअजमुल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 104 मज़ार, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, लुबनान)

इस वाक़िया के रोज़ लोगों की ज़बान पर यह फ़िक़रा था कि सफ़र का महीना आ गया है और इस में हर ज़ालिम सरकश क़तल होगा जहां दरिया इकट्ठे होते हैं। हुर्मुज़ ज़ातुल सलासिल की जंग में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के मद्द-ए-मुक़ाबिल था उसने अपने बादशाह को मदद के लिए लिखा था। बादशाह ने इस की मदद के लिए कारिन की क़ियादत में एक लश्कर भेजा परन्तु वे लश्कर अभी मज़ार के मुक़ाम पर पहुंचा था कि इस को जंग ज़ाते सलासिल में हुर्मुज़ की शिकस्त की और उस के मारे जाने की सूचना मिली और साथ ही हुर्मुज़ की फ़ौज के शिकस्त खाए हुए दस्ते भी मज़ार में कारिन से आ मिले और उनमें से बाअज़ दस्तों के सिपाहियों ने दूसरे दस्तों के सिपाहियों से कहा कि अगर आज तुम मुतफ़र्रिक़ हो गए तो फिर कभी जमा नहीं हो सकोगे। इसलिए एक दम वापसी के लिए इकट्ठे हो जाओ। वे दौड़ी हुई फ़ौज जो थी वह भी और जो नई मदद आ रही थी या नई फ़ौज जो ईरान से आ रही थी दोनों मिल गए और दोनों ने एक दूसरे को इस बात पर जोश दिलाया कि जंग होनी चाहिए। जो दौड़े हुए थे उन्होंने कहा यह बादशाह की मदद पर मुश्तमिल नया लश्कर आ पहुंचा है। और यह उसका सिपहसालार कुअरिन हमारे साथ है मुम्किन है कि ख़ुदा हमें ग़लबा अता करे और हमारे दुश्मन से हमें निजात अता फ़रमाए और हम अपने नुक़्सानात की किसी क़दर भरपाई कर लें। इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया और उन्होंने मज़ार में पड़ाव डाल दिया। कुअरिन ने पत्येक प्रथम दस्ते पर कुबाज़ और अनुशाजन को मुक़र्रर किया जो जंग ज़ात-ए-सलासिल में फ़रार हो गए थे। दूसरी तरफ़ दुश्मन की इस तैयारी की इत्तिला हज़रत मुसन्ना और हज़रत मुअन्ना ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को भेज दी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कारिन की इत्तिला पाते ही मार्का ज़ात-ए-सलासिल में हासिल होने वाला माल-ए-ग़नीमत इन्ही मुजाहेदीन में तक़सीम कर दिया जिनको ख़ुदा ने वे माल-ए-ग़नीमत दिया था और ख़ुमुस में से मज़ीद जिस क़दर चाहा दिया और मार्क-ए-ज़ात-ए-सलासिल में हासिल होने वाला बाक़ी माल-ए-ग़नीमत और इस मार्के में जो फ़तह हुई थी उस की ख़ुशख़बरी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में भिजवा दी और इस अमर से भी सूचित कर दिया कि मार्क-ए-ज़ात-ए-सलासिल में दुश्मनों की पराजय प्राप्त फ़ौज और कुअरिन की सरबराही में आने वाला नया लश्कर एक जगह जमा हो रहे हैं। इसलिए हज़रत ख़ालिद रवाना हुए और मज़ार में कारिन की फ़ौज के मुक़ाबले पर आए और अपनी फ़ौज की सफ़-आराई की। दोनों तरफ़ से मुक़ाबला हुआ। दोनों हरीफ़ों की निहायत ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब की हालत में मुढ भेड़ हुई। कुअरिन् मुबारिज़ात के लिए मैदान में निकला। दूसरी तरफ़ से इस के मुक़ाबले के लिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत माक़ल बिन आशा आगे बढ़े। दोनों कारिन की तरफ़ लपके परन्तु हज़रत माकल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से पहले कारिन को जा लिया और उसे क़तल कर दिया। हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनु शाजान रज़ियल्लाहु अन्हु को और हज़रत अदी ने क़ुबाज़ को क़तल कर दिया। इन तीनों सरदारोँ के मारे जाने से ईरानी हौसला हार बैठे और मैदान छोड़ कर भागने लगे। इस जंग में अहले फ़ारस की बहुत बड़ी संख्या मारी गई और जो लोग पसपा हुए वे अपनी कश्तियों में सवार हो कर भागे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ार में क़ियाम किया और हर मक़्तूल का सामान ख़ाह वह किसी क़ीमत का हो उसी मुजाहिद को अता किया जिसने उसे क़तल किया था और माल फै को भी उनमें तक़सीम किया तथा ख़ुमस में से उन लोगों को हिस्सा दिया जिन्हों ने नुमायां कारनामे सरअंजाम दिए थे और ख़ुमस के बाक़ी हिस्सा को एक वफ़द के साथ हज़रत सईद बिन नोमान की सरकर्दगी में मदीना रवाना कर दिया। एक रिवायत के मुताबिक़ इस जंग में तीस हज़ार ईरानी क़तल हुए और यह इनके इलावा हैं जो नहर में डूब कर मर गए और कहा जाता है कि अगर यह पानी रोक न होता तो उनमें से एक भी न बचता। फिर भी जो लोग बच कर भागे वे बहुत परागंदाहाल और अपना सब कुछ छोड़कर भागे। जंग के बाद लड़ाई में हिस्सा लेने वालों और ईरानी फ़ौज की हिमायत करने वालों को परिवार सहित के क़ैद कर लिया गया। इन क़ैदियों में अबुलहसन बस्री भी शामिल थे। अबुलहसन बस्री के बारे में कहा जाता है कि इमाम हसन बस्री के पिता थे जो कि बस्रा के मशहूर वक्ता और सूफ़ी थे, मुस्लमान हुए। कहा जाता है कि अबुलहसन बस्री को क़ैद करने के बाद मदीना लाया गया जहां उनकी मालिका ने उन्हें आज़ाद कर दिया था।(उद्धरित तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 312-311दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(माख़ूज़ अज़ उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामिया, भाग 8 पृष्ठ 262)

इस फ़तह के बाद आम रियाया से बेहद नरमी का सुलूक किया गया। काश्तकारों और उन समस्त लोगों को बग़ैर किसी किस्म की तकलीफ़ पहुंचाए टैक्स की अदायगी पर आमादा कर दिया गया और उन्हें उनकी ज़मीनों और जगहों पर बरक़रार रखा गया। इन इबतिदाई उमूर से फ़राग़त हासिल करके हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मफ़्तूहा इलाक़े के नज़म-ओ-नसक़ की तरफ़ तवज्जा की।

टैक्स वसूल करने के लिए जगह जगह उम्माल निर्धारित किए गए। मफ़्तूहा इलाक़े की हिफ़ाज़त के लिए उन्होंने हफ़ीर और जिस आज़म अर्थात सबसे बड़े पुल पर फ़ौजें निर्धारित कर रखी थीं, उनका इंतेज़ाम और बेहतर बनाया गया और फ़ौजों के समस्त दस्तों को मुख़्तलिफ़ अफ़िसरों के ज़ेर निगरानी देकर उन्हें दुश्मनों की ख़ुफ़ीया और ऐलानिया सरगर्मीयों से ख़बरदार रहने और मौक़ा पड़ने पर उनका मुक़ाबला करने का हुक्म दे दिया गया। ख़ालिद की जंगी महारत का सबूत इससे बढ़कर और क्या होगा कि सरज़मीन-ए-ईरान में उनकी पेशक़दमी के आग़ाज़ ही से किसरा की ताक़तवर फ़ौजें मग़लूब होनी शुरू हो गईं और उनके दम-ख़म, हौसले और वलवले सब ठन्डे पड़ गए।

जंग मज़ार हीरा से कुछ ही फ़ासले पर हुई थी। हीरा ख़लीज और मदायन के तक़रीबन दरमयान में स्थित है।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 275 अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानी पती इलम और इरफ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

इस जंग के बाद के मामलात से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु दशमन की नक़ल-ओ-हरकत की ख़बरों की जुस्तजू में लग गए।(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 312 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) ताकि देखें दुश्मन की क्या मूवमैंट है। वे दुबारा इस्लाम के ख़िलाफ़ इकट्ठे तो नहीं हो रहे?

वलज की जंग एक जंग है। वलज की जंग। सफ़र बारह हिज्री में हुई। वलजा कसकर के क़रीब ख़ुशकी का इलाक़ा है। जंग मज़ार में ईरानियों को जिस शर्मनाक शिकस्त का सामान करना पड़ा कि इस में उनके बड़े बड़े सरदार भी मारे गए थे। इस पर ईरानी शहनशाह ने एक और हिक्मत-ए-अमली तै करते हुए और ज़्यादा तैयारी के साथ मुस्लमानों का मुक़ाबला करने की मंसूबाबंदी की। इसलिए ईरानी हुकूमत ने इराक़ में बसने वाले ईसाईयों के एक बहुत बड़े क़बीला बकर बिन वायल के बड़े लोगों को दरबार-ए-ईरान में बुलाया और उनको मुस्लमानों के साथ लड़ने पर आमादा करके एक लश्कर तर्तीब दिया और इस लश्कर की क़ियादत एक मशहूर शहसवार उनके हाथ में दी और यह लश्कर वलजा की तरफ़ रवाना हो गया। इराक़ में ईसाईयों का एक बहुत बड़ा क़बीला बकर बिन वायल आबाद था। शहनशाह अर्दशीर ने उन्हें तलब किया और उनकी एक फ़ौज तैयार करके उन्हें मुस्लमानों से मारका-आराई के लिए वलजा की जानिब रवाना कर दिया। हीरा और कसकर के नवाही इलाक़ों के लोग और किसान भी इस लश्कर के साथ मिल गए। हीरा कूफ़ा से तीन मील जुनूब मग़रिब में एक शहर है। किसरा कूफ़ा और बस्रा के मध्य एक क़स्बा था। बहरहाल लेकिन इस ख़्याल से कि मुस्लमानों पर फ़त्हयाबी का फ़ख़र मुकम्मल तौर पर ईसाई अरबों के हिस्सा में न आए अपने एक बड़े सिपहसालार बहमन जाज़विया को भी एक भारी लश्कर के साथ उनके पीछे ही रवाना कर दिया। (तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 312 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2012) (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ : 287-288)

जब इस फ़ारसी सरदार को यह महसूस हुआ कि उनकी फ़ौज बहुत बड़ी हो गई है तो उसने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ऊपर हमला करने का फ़ैसला किया। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ारसी फ़ौज के वलजा में जमा होने की ख़बर मिली उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बसरा के क़रीब थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुनासिब समझा कि फ़ारसी फ़ौज पर तीन जिहात से हमला करें ताकि उनकी जमईयत मुंतशिर हो जाए और इस तरह अचानक हमले से फ़ारसी फ़ौज परेशानी का शिकार हो जाए।

(सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 406)

इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुवैद बिन मुकर्रिन को क़ायमक़ाम

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

निर्धारित किया और उन्हें हफ़ीर में ही क़ियाम पज़ीर होने का हुक्म दिया और उन लोगों के पास पहुंचे जिनको दिजला के जरीन जानिब धोड़ा हुआ था। उनको हुक्म दिया कि दुश्मन से हरवक़त चूकने रहें और ग़फ़लत और फ़रेब में मुबतला न हों और अपनी फ़ौज को लेकर दजला की तरफ़ पेशक़दमी की और दुश्मन के लश्कर और उसकी मुआविन जमाअतों के मुक़ाबले पर उतरे और शदीद तरीन जंग हुई। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौज के दोनों तरफ़ मुजाहिदीन के ज़रीया घात लगा रखी थी। आख़िरकार घात लगाए हुए दोनों दस्ते दोनों तरफ़ से दुश्मन पर हमला-आवर हुए। ईरानियों की फ़ौजें शिकस्त खा कर भागें परन्तु हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सामने से और घात लगाए हुए दोनों दस्तों ने पीछे से उनको ऐसा घेरा कि वह बौखला गए यहां तक कि किसी को अपने साथी के क़तल की भी पर्वा न रही। दुश्मन फ़ौज का सिपहसालार हज़ीमतख़ुर्दा हो कर अंततः मारा गया। काश्तकारों के साथ हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वही सुलूक किया जो उनका तरीक़ था अर्थात उनमें से किसी को क़तल नहीं किया। केवल जंगजू लोगों की औलाद और उनके सहयोगियों को गिरफ़्तार किया और आम बाशिंदगान देश को जुज़्य देने और ज़िम्मी बन जाने की दावत दी जिसको उन लोगों ने स्वीकार कर लिया।

(तारीख़ भाग 2, पृष्ठ 312 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2012 ई.)

फिर जंग उल्लैस का वर्णन है। जंग उल्लैस माह सफ़र बारह हिज्री में हुई। उल्लैस भी इराक़ में उनकी बस्तियों में से एक बस्ती थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों दलजा के दिन क़बीला बकर बिन वायल और ईरानियों को पहुंचने वाली एक और इबरतनाक शिकस्त से उनके हमक़ौम ईसाई ग़ज़बनाक हो गए। उन्होंने ईरानियों को और ईरानियों ने उनको पत्र लिखे और उलैस के मुक़ाम पर सब जमा हो गए। उनका सरदार अब्दुल असवद अजली निर्धारित हुआ। इसी तरह ईरानी बादशाह ने बहमन जाज़विया को ख़त लिखा कि तुम अपने लश्कर को लेकर उल्यस पहुँचो और फ़ारस और अरब के नसारा में से जो लोग वहां जमा हैं उनसे जा मिलो लेकिन बहमन जाज़विया ख़ुद तो लश्कर के साथ नहीं गया जवकि उसने अपनी जगह एक और नामवर बहादुर जाबान को रवाना किया और उसको हुक्म दिया कि लोगों के दिलों में जंग का जोश पैदा करो परन्तु मेरे आने तक दुश्मन से लड़ाई शुरू नहीं करना सिवाए इसके वह ख़ुद पहल करें। जाबान उल्लेस की तरफ़ रवाना हुआ। बहमन जाज्विया ख़ुद ईरानी बादशाह अर्द शीर के पास गयाता कि इस से मश्वरा करे परन्तु यहां आकर देखा कि बादशाह बीमार पड़ा है। इसलिए बहमन जाज़विया तो इस की तीमारदारी में लग गया और जाबान को कोई हिदायत नहीं भेजी। जाबान अकेला लश्कर के हमराह महाज़-ए-जंग की तरफ़ रवाना हो कर माह सफ़र में उलैस पहुंचा।(तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 313 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012 ई.)(मोजमुल बुल्दान, भाग 1, पृष्ठ 294 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत)

मुख़्तलिफ़ क़बायल और हीरा के नवाही इलाक़ों के अरब ईसाई जाबान के पास जमा हो गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को जबान ईसाई गिरोहों के इकट्ठा होने की इत्तिला मिली तो आप उनके मुक़ाबले के लिए निकले परन्तु आपको मालूम नहीं था कि जाबान भी क़रीब आ गया है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु केवल इन अरबों और ईसाईयों से लड़ने के इरादे से आए थे परन्तु उलैस में जाबान से सामना हो गया। जब जाबान उलैस पहुंचा तो उस अवसर पर अजमियों ने जाबान से पूछा कि आपकी क्या राय है। आया पहले हम उनकी ख़बर लें या लोगों को खाना खिला दें। अर्थात जंग शुरू करें या पहले खाना खा लें और फिर खाने से फ़ारिग़ हो कर उनसे जंग करें। जाबान ने कहा कि अगर दुश्मन तुमसे कोई तार्रुज़ न करें तो तुम भी ख़ामोश रहो लेकिन मेरा ख़्याल है कि वे तुम पर अचानक हमला करेंगे और तुम्हें खाना नहीं खाने देंगे। इन लोगों ने जाबान की बात नहीं मानी। दस्तर-ख़्वान बिछाए। खाना चुना गया और सबको बुला कर खाना खाने में मसरूफ़ हो गए।

(उद्धरित अल् कामिल फिल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 241दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2006 ई.)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु दशमन के मुक़ाबिल पर पहुंच कर ठहर गए। सामान उतारने का हुक्म दिया। इस काम से फ़राग़त हुई तो दुश्मन की तरफ़ मुतवज्जा हुए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पीछे की हिफ़ाज़त के लिए मुहाफ़िज़ दस्ते मुक़र्रर किए और दुश्मन की सफ़ की तरफ़ बढ़कर ललकारते हुए कहा। अब कहाँ है? अब्दुल असवद कहाँ है? मालिक विन केस कहाँ है? मालिक के इलावा बाक़ी सब बुज़दिली की वजह से ख़ामोश रहे। मालिक आपके मुक़ाबले के लिए निकला। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस से कहा इन सब में से तुझे मेरे मुक़ाबिल पर आने की किस बात ने जुर्रत दिलाई है? तुझ में मेरा मुक़ाबला करने की ताक़त कहाँ यह कह कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस पर वार किया और उसे क़तल कर दिया और अजमियों को पूर्व इस के कि वे कुछ खाएं, दस्तर ख़वान पर से उठा दिया। जाबान ने अपने लोगों से कहा क्या मैं ने तुमसे पहले नहीं कहा था कि खाना शुरू न करो। बख़ुदा मुझे किसी सिपहसालार से ऐसी दहश्त नहीं हुई है जैसी कि आज इस लड़ाई में हो रही है। जब वे लोग खाना खाने पर क़ादिर न हो सके तो अपनी बहादुरी जताने के लिए कहने लगे कि खाने को फ़िलहाल हम छोड़ देते हैं यहां तक कि हम मुस्लमानों से फ़ारिग़ हो लें फिर हम खाना खा लेंगे। जाबान ने कहा कि बख़ुदा मेरा गुमान यह है कि तुमने यह खाना दुश्मन के लिए रख छोड़ा है। यह न समझो कि तुम लोग जीत जाओगे और फिर खा लोगे बल्कि मुझे लगता है यह खाना तो तुम्हारा दुश्मन ही खाएँगे यानी मुस्लमान ही खाएँगे जबकि तुम समझ नहीं रखते। तो फिर उसने लोगों को कहा मेरी बात मानो तो यह है कि खाने में ज़हर मिला दो। अगर तुम्हारी फ़तह हुई तो यह नुक़्सान बहुत कम है खाना ज़ाए होने का और अगर फ़तह दुश्मन की हुई तो तुम कोई ऐसा काम कर चुके होगे जिससे दुश्मन ज़हरीला खाना खाने की वजह से मुसीबत में मुबतला होगा। परन्तु वे लोग जो थे उनको तो अपनी फ़तह का पुख़्ता यक़ीन था। इन लोगों ने कहा कि नहीं इसकी, ज़हर मिलाने की ज़रूरत नहीं है। हम आराम से जंग जीतेंगे और फिर खाना खाएँगे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हुने अपनी फ़ौज की सफ़-आराई इस तरह की जैसा कि इससे पहले की लड़ाईयों में कर चुके थे। शदीद तरीन लड़ाई होने लगी। ईरानियों को बहमन जाज़विया के आने की आशा थी इसलिए ख़ूब जम कर बड़ी शिद्दत से लड़े क्योंकि जाबान उनको उम्मीद दिला रहा था कि वे एक बड़ा लश्कर लेकर चल पड़ा है और अभी पहुंचने ही वाला है जबकि असल हक़ीक़त यह थी कि बहमन को तो ईरानी बादशाह के बीमार होने की वजह से न तो बादशाह से सूरत-ए-हाल ज़िक्र करने का अवसर मिला और न ही वे ख़ुद लश्कर लेकर आ सकता था बल्कि उसका जाबान से किसी किस्म का सम्पर्क भी न रहा था। बहरहाल इस जंग में मुस्लमान भी उनके ख़िलाफ़ ख़ूब जोश और ग़ज़ब में आए बड़ी सख़्त जंग हुई।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 313 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

ईरानी फ़ौज के जोश-ओ-जज़बा और मुस्लमानों की कमज़ोर पड़ती हालत का वर्णन करते हुए एक सीरत निगार लिखता है कि ईरानी लश्कर में से पहले ईसाईयों ने हमला किया लेकिन उनका सरदार मालिक बिन क़ैस मारा गया। इस का मारा जाना था कि उनकी हुआ उखड़ गई और वे बद-दिल हो गए।

यह देखकर जाबान ने ईरानी फ़ौज को आगे झोंक दिया। ईरानी इस उम्मीद पर कि अभी बहमन नई मदद लेकर आया चाहता है ख़ूब दिलेरी से लड़े। मुस्लमानों ने बार-बार हमले किए लेकिन हर बार ईरानियों ने कमाल बहादुरी और मुस्तक़िल मिज़ाजी से हमले को नाकाम बना दिया। अंततः हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने माद्दी अस्बाब और ज़राए को नाकाफ़ी होता देखकर बड़ी आजिज़ी से हाथ उठा कर दुआ मांगी और अर्ज़ की कि हे अल्लाह! अगर तू मुझे दुश्मनों पर ग़लबा अता फ़रमाएगा तो मैं किसी एक दुश्मन को भी ज़िंदा नहीं छोड़ूँगा और यह दरिया उनके ख़ून से सुर्ख़ हो जाएगा। कुछ कुतुब में है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़सम खाई थी या नज़र मानी थी कि अगर इस जंग में फ़तह हो गई तो किसी भी दुश्मन जंगजू को ज़िंदा नहीं छोड़ूँगा। बहरहाल इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हुने जंगी चाल चलते हुए फ़ौज को दाएं और बाएं जानिब से ईरानी लश्कर के अक़ब पर हमला करने का हुक्म दिया। इस हमले से ईरानी लश्कर तित्र बित्तर हो गया और उसे भागने या हथियार डालने में ही आफ़ियत नज़र आई। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुक्म दिया कि दुश्मन को पकड़ कर क़ैदी बना लो और मुक़ाबला करने वालों के सिवा किसी को क़तल न करो। सिर्फ उनको क़तल करना जो मुक़ाबला करते हैं।(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 671-672 منسوب به استاذ عمر ابو النصر, अनुवादक)(तारीख़ तबरी उर्दू, भाग 2 पृष्ठ 564 दारुल इशात)

इस बारे में रिसर्चसेल का एक नोट है और मैंने भी देखा है। यही बात सही लगती है। इस की वज़ाहत करते हुए तारीख़ तिबरी समेत अक्सर सीरत निगारों और इतिहासकारों ने वर्णन किया है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी इस दुआ में जो अह्द किया था उसके मुताबिक़ एक दिन और एक रात इन क़ैदियों को क़तल करके नहर में डाला गया ताकि उसका पानी ख़ून से सुर्ख़ हो जाए यानी उन्होंने न केवल जंग करने वालों से जंग लड़ी बल्कि क़ैदियों को भी क़तल कर दिया और इस वजह से यह नहर आज तक नहर अल्दिमा अर्थात ख़ून की नहर के नाम से प्रसिद्ध है।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2, पृष्ठ 314 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

लेकिन बहरहाल यह हक़ीक़त नहीं लगती कि क़ैदियों को क़तल करके फिर नहर में ख़ून फेंका गया हो और जीवनी लेखकों ने इस में कुछ बढ़ोतरी से काम लिया है या संभव है कि वह ज़हन जो इस्लामी जंगों में जान-बूझ कर ज़ुलम-ओ-बरबरीयत की झूठी कहानियां शामिल करने का बीड़ा उठाए हुए थे उन्होंने जहां अवसर मिला अपनी तरफ़ से ऐसे वाक़ियात को शामिल कर दिया था।

तारीख़ निगारों में कुछ दुश्मन भी थे तो ऐसे दुश्मनी रखने वाले या कीना रखने

वाले जो मुस्लमानों के ख़िलाफ़ कोई न कोई ऐसी बात लिख दिया करते थे उन्होंने लिख दिया हो कि क़ैदियों को क़तल करके नहर में बहा दिया लेकिन बज़ाहिर यह लगता है कि बहरहाल ऐसी कोई बात शामिल की गई है ताकि दजल और फ़रेब से लोगों के सामने यह पेश करें कि देखें किस तरह मुस्लमानों ने ज़ुलम-ओ-सितम किए और निहतते क़ैदियों को क़तल किया गया। कुछ कि प्रथम तो क़ैदियों को क़तल करना उस वक़्त के क़वायद-ओ-ज़वाबत और जारी जंगी उसूलों की दृष्टि से कोई काबिल एतराज़ बात भी नहीं थी लेकिन इस्लामी जंगों ने ख़ुसूसन आँहज़रत सिल्ली अल्लाह अलैहि वसल्लम के अह्द मुबारक और अह्द ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की जंगों में वास्तव में ऐसा हुआ भी नहीं कि क़ैदियों को इस तरह क़तल किया गया हो। हरचंद कि इन जंगों में हज़ारों लाखों तक मक़्तूलीन की संख्या मिलती है लेकिन ये सब वे थे कि जो हालत-ए-जंग में मारे गए थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु जेसे सिपहसालार का जंगों का अध्ययन किया जाए तो उन्होंने भी जहां तक मुम्किन हुआ मैदान-ए-जंग में भी हर उस शख़्स की जान बख़शी ही की है जिसने हथियार फेंक दिए या इताअत क़बूल कर ली और जिसको भी क़तल किया बावजूद तारीख़ निगारों की अफ़्साना-तराज़ा के तहक़ीक़ करने पर उसके क़तल की ठोस वजूह और अस्बाब मौजूद पाए गए हैं। बहरहाल इस वाक़िया को देखा जाए तो यह भी कुछ बनावटी क़िस्सा ज़्यादा मालूम होता है क्योंकि इतिहासकारों और सीरत निगार जो कि इन जगहों की तमाम-तर तफ़सीलात वर्णन करते हैं और वर्णन करते हुए हर छोटी से छोटी बात का भी वर्णन करते हैं उनमें से कुछ ने इस वाक़िया का सिरे से वर्णन ही नहीं किया और ये इस बात की दलील है कि बनाई गई बातें हैं। और एक मुसन्निफ़ ने जो बहुत आज़ादाना राय रखते हुए तारीख़ को वर्णन करते हैं और काबिल एतराज़ हद तक ऐसी बातें भी वर्णन कर जाते हैं कि जिससे इत्तिफ़ाक़ नहीं किया जा सकता वे भी इस वाक़िया का वर्णन करने के बाद लिखते हैं कि रावियों ने यह रिवायत वर्णन करके मुबालग़ा आराई की इंतिहा कर दी है। इतना यक़ीनी है कि ख़ालिद ने क़तल-ए दुश्मनाँ-ए-इस्लाम में इतना तशद्दुद बरता था कि उसे देखकर काकअ और उसके साथीयों से रहा नहीं गया।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ डाक्टर ताहा हुसैन पृष्ठ 85-86)

इसी तरह एक मुसन्निफ़ ने इस वाक़िया को वर्णन किया है। अर्थात सख़्ती तो की थी क़ैदियों पर लेकिन क़तल करना यह ग़लत है। इसी तरह एक मुसन्निफ़ ने इस वाक़िया को वर्णन किया है जिससे मालूम होता है कि अमलन या हक़ीक़ी तौर पर ईरानियों को नहर में क़तल करके फेंका नहीं गया था।

इसलिए वह लिखता है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हुने फुर्ती से हमले करके ईसाईयों को इस तरह काटना और ईरानी सफ़ों को ज़ेर-ओ-ज़बर करना शुरू किया जैसे वे मिट्टी के बने हुए हों और गोश्त-पोस्त के इन्सान न हों। चूँकि ईरानी लंबाई में दूर तक फैले हुए थे इसलिए उन्होंने हिलाली सूरत में आधा दायरा बना लिया था और बढ़कर मुस्लमानों को नर्ग़े में ले लिया। अब सूरत यह हो गई कि मुस्लमानों के चारों तरफ़ ईरानी और ईसाई अरब छा गए और बड़े जोश से लड़ने लगे लेकिन जिस जोश-ओ-ख़ुरोश से मुस्लमान लड़ रहे थे वह ईसाईयों में नहीं था।

हर मुस्लमान ख़ूँख़ार शेर बन गया और ज़ोरदार हमले करके ईसाईयों को घास फूस की तरह काट रहा था। जबकि ईरानी भी मुस्लमानों को शहीद और ज़ख़मी कर रहे थे लेकिन मुस्लमान बहुत कम गिर रहे थे और जो ज़ख़मी होता वह और भी जोश के साथ लड़ने लगता था। ईरानी इस कसरत से मर रहे थे कि उनकी लाशों से मैदान भरा पड़ा था और जो ईरानी ज़ख़मी हो जाता था वह मैदान-ए-जंग से हट जाता था। मुस्लमानों ने इस क़दर ख़ूँरेज़ी की कि उनके कपड़ों पर ख़ून के धब्बे जम गए। ख़ालिद बिन वलीद के कपड़ों का भी यही हाल था। ईरानियों के ख़ून से ज़मीन सेराब हो गई और फ़ालतू ख़ून पानी की तरह बहने लगा। आख़िर ईरानियों को हार हुई और वे बदहवास हो कर भागे। मुस्लमान उनके पीछे लग गए और दूर तक उन्हें क़तल और गिरफ़्तार करते चले गए और ईरानी ऐसे बदहवास हो कर भागे कि उनके हज़ारों सिपाही दरिया में गिर कर डूब गए। जब ईरानी दूर निकल गए तब मुस्लमान वापिस लौटे। इस लड़ाई में सत्तर हज़ार ईरानी मारे गए। मुस्लमान एक सौ अड़तीस शहीद हुए। बहरहाल इतिहासकारों को इस बात पर भी हैरत होती है कि मुस्लमानों ने ईरानियों की इतनी बड़ी संख्या को कैसे मार डाला। (हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ सादिक़ हुसैन पृष्ठ 161-162)

एक तारीख़ निगार ने यह लिखा है । इस हवाले से साफ़ नज़र आता है कि अगर नहर के पानी के सुर्ख़ हो जाने वाले वाक़िया को दरुस्त तस्लीम भी कर लिया जाए तो वो लोग जिनकी वजह से नहर ख़ून से सुर्ख़ हो गई वे उन्हें ज़ख़मी सिपाहियों के डूबने की वजह से भी तो हो सकती थी। लिहाज़ा कहा जा सकता है कि ऐसे वाक़ियात में बढ़ोतरी की आमेज़िश भी किसी हद तक शामिल हो गई जिसकी बिना पर इस्लामी जंगों और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात पर रक़ीक़ हमले करने वालों को अवसर मिले।

या जंगों में मुस्लमानों पर वहशयाना तर्ज़ इख़्तियार करने का इल्ज़ाम लगाया गया। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है लेकिन बज़ाहिर यही लगता है कि सिर्फ इल्ज़ाम लगाया गया।

बहरहाल जब दुश्मन की पराजय हो चुकी और इस की फ़ौज परागंदा हो गई और मुस्लमान उनके पीछा करने से फ़ारिग़ हो कर वापिस आ गए तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु खाने के पास आकर खड़े हुए और कहा यह मैं तुम लोगों को देता हूँ ये तुम्हारे लिए है क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़वात में जब मैदान छोड़कर भागने वाले दुश्मन का तैयार खाना पाते तो इस को अपनी फ़ौज में तक़सीम कर देते थे। इसलिए मुस्लमान रात के खाने के तौर पर उसे खाने लगे उलैस की जंग में दुश्मन के सत्तर हज़ार आदमी हलाक हुए जैसा कि वर्णन हो चुका है।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 314 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत 2012 ई.)

अमगिशया की फ़तह के बारे में लिखा है। अमगिशया को अल्लाह ने सफ़र बारह हिज्री में जंग के बग़ैर ही फ़तह करा दिया था। अमगिशया इराक़ में एक जगह का नाम है। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु उलैस की फ़तह से फ़ारिग़ हो गए तो आपने तैयारी की और अमगिशया आए मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने से क़बल ही वहां के बाशिंदे जल्दी से बस्ती छोड़कर भाग गए और सौअदि में मुंतशिर हो गए। इराक़ में वे बस्तीयां जिनको मुस्लमानों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में फ़तह किया तो वहां खेतों में सरसब्ज़ी की वजह से उसे सुवोद का नाम दिया गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमगिशया और इस के क़ुरब-ओ-जवार में जो कुछ भी था उसे मुनहदिम करने का हुक्म दिया। अमगिशयाही के बराबर का शहर था। उलैस इस मुक़ाम की फ़ौजी चौकी थी।

मुस्लमानों को अमगिशया से इस क़दर माल-ए-ग़नीमत हासिल हुआ कि ज़ात-ए-सलासिल से लेकर अब तक किसी जंग में हासिल नहीं हुआ था।

इस जंग में घुड़सवारों का हिस्सा पंद्रह सौ दिरहम था और यह हिस्सा इन अम्वाल ग़नीमत के इलावा था जो कारहाए नुमायां अंजाम देने वालों को दिया गया था। उलैस और अमगिशया फ़तह की इत्तिला हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बनू इजल के एक जंदल नामी शख़्स के ज़रीया रवाना की थी जो एक बहादुर गाईड के तौर पर मशहूर थे। उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में पहुंच कर उलैस की फ़तह की ख़ुशख़बरी, माल-ए-ग़नीमत की मिक़दार, क़ैदियों की संख्या, पाँचवी में जो चीज़ें हासिल हुई थीं और जिन लोगों ने कारहाए नुमायां अंजाम दिए थे। इन सबकी तफ़सील और खासतौर पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी के कारनामे बहुत उम्दगी से बयान किए। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उनकी बहादुरी, पुख़्ता राय और फ़तह की ख़बर सुनाने का ये अंदाज़ बहुत पसंद आया अर्थात जो नुमाइंदा भेजा था उसका जो तरीक़ था और उसकी बहादुरी के क़िस्से थे और जो अंदाज़-ए-बयान था उसका, वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को बड़ा पसंद आया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस से पूछा तुम्हारा नाम क्या है? उसने अर्ज़ किया मेरा नाम जिन्न है। आपने फ़रमाया बहुत ख़ूब जिंदल। और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसको माल-ए-ग़नीमत में से एक लौंडी देने का हुक्म दिया जिससे उसके हाँ औलाद पैदा हुई। इसी तरह इस मौक़ा पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया: अब औरतें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु जेसा शख़्स पैदा नहीं कर सकेंगी।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 314-315 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत 2012 ई .) (हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ हैकल, पृष्ठ 312 इस्लामी कुतुब ख़ाना)(मोजमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 301 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत)(मोजमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 309 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत)

बाक़ी इन शा अल्लाह आगे ।

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-4)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

प्रश्न : एक तालिब-ए-इलम ने प्रश्न किया कि जब अपने आपको वक़्फ़ करने का समय आता है तो वक़्फ़ करते हुए अपनी पसंद की फ़ील्ड में जा सकते हैं? उदाहरण के लिए यदि किसी ने पायलट बनना है तो क्या वह बन सकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप वक़्फ़ नौ हो आपने पायलट बनना है तो आप पहले पूछें कि मेरी बहुत ज़्यादा इच्छा पायलट बनने की है। मैं केवल पायलट ही बन सकता हूँ कुछ और नहीं बन सकता। तो फिर आपको या समय के ख़लीफा बता देगा कि आप पायलट बन सकते हैं कि नहीं बन सकते। यदि आपको आज्ञा मिल जाए तो बन जाएं। या फिर यह है कि आप आज्ञा ले के यह कह दें कि मैं वक़्फ़ नौ से बाहर निकलना चाहता हूँ। मेरे अम्मां अब्बा ने तो मुझे वक़्फ़ किया था। यदि जमाअत को आवश्यकता नहीं तो मेरी दिलचस्पी यह है। मुझे आज्ञा दी जाए कि मैं यह काम करलूं। फिर किसी समय किसी और तरीक़े से मैं जमाअत की सेवा करलूंगा। परन्तु इस समय वक़्फ़ नौ की फ़हरिस्त में से मुझे काट दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया वक़्फ़ नौ के लिए मैंने हिदायत दी हुई है कि जमाअत की ओर से गाईडनस और कौंसलिंग पूरी मुकम्मल होनी चाहिए। जिनकी हमें ज़्यादा आवश्यकता है वह डाक्टरज़ हैं टीचरज़ हैं। ट्रांसलेशन करने वाले हैं। भाषाओं के माहिर हैं। इंजीनियरज़ हैं, आर्कीटेक्ट हैं और कुछ विभाग ऐसे हैं कई दफ़ा वकीलों की भी आवश्यकता पड़ती है। जो विभिन्न Skills हैं यदि जो विद्यार्थी ज़्यादा न पढ़ सकें तो दूसरे विभिन्न फ़ील्डज़ में भी उनकी आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त पूछ लो या कुछ समय के लिए कुछ लोग कह देते हैं अच्छा हमारी यह दिलचस्पी है हमें कम से कम दो साल, चार साल, छः साल, आज्ञा दें कि हम वह काम कर लें । तो उनको आज्ञा मिल जाती है। परन्तु वक़्फ़ असल यही है कि वह चीज़ करो जिसकी जमाअत को आवश्यकता है।

प्रश्न : एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि हमको यह facebook प्रयोग करने से क्यों मना किया गया है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कोई हराम नहीं क़रार दिया गया। बंद इस लिए किया है कि इस में बहुत सारी बुराईयां सामने आ जाती हैं। तुम लोग अभी बच्चे हो छोटे हो तुम लोगों को पता ही नहीं लगता कि दूसरे लोग तुम्हें आहिस्ता-आहिस्ता trap कर लेते हैं। अब जब तक तुम्हारा ज्ञान पूरा न हो जब तक तुम्हारी सोच mature न हो उस समय तक तुम प्रयोग न करो। जमाअत अहमदिया का जो alislam.org है इस में फेसबुक भी है। हमारे प्रैस वालों ने एक फेसबुक बनाई हुई है। तुम इस से लाभ उठाओ। पर्सनल फेसबुक से इस लिए मना किया गया है कि तुम लोगों को पूरा ज्ञान नहीं है कई दफ़ा तुम लोग ग़लत हाथों में टरैप हो जाते हो। अब संसार में बहुत सारे फेसबुक अकाऊंट हैं। संसार को भी realize हो रहा है कि उनको अब समझ आ रही है कि फेसबुक में कई दफ़ा बुराईयां ज़्यादा हैं इस लिए अमरीका में ही पिछली दिनों में लगभग कोई छः लाख एकाऊंटस उन्होंने बंद कर दिए। यह कह के कि हमें फेसबुक ने नुक़्सान पहुंचाया है। यदि उन लोगों को समझ आ गई है जो दुनिया-दार हैं तो हम दीनदार को ज़्यादा जल्दी समझ आनी चाहिए । हाँ यदि तुम्हें तब्लीग़ के लिए करना तो alislam वाली फेसबुक प्रयोग कर लो।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन वाकफ़ीन नौ विद्यार्थी को इनाम प्रदान फ़रमाए जिन्होंने अपनी अपनी आयु का निसाब वक़्फ़ नौ मुकम्मल कर लिया और अव्वल, दोम, सोइम आए।

इसके बाद "वाकिफ़ात नौ" की क्लास का आरंभ हुआ। इस क्लास में जर्मनी भर से 12 से पंद्रह वर्ष की तलगभग 300 वाकफ़ात नौ शामिल थीं। इस क्लास का विषय "दुआ" रखा गया था।

प्रोग्राम का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो प्रिय निदा ख़ान ने प्रस्तुत की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिय अमतुल बाकी मिर्ज़ा ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद प्रिय ख़दीजा मसऊद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की निमंलिखित हदीस प्रस्तुत की और इसका अनुवाद प्रिय सायरा वहीद ने पढ़ कर सुनाया। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया । (अल्लाह तआला बड़ा हया वाला, बड़ा करीम और सख़ी है। जब बंदा उसके हुज़ूर अपने दोनों हाथ बुलंद करता है तो वह उनको ख़ाली और नाकाम वापस करने से शरमाता है। अर्थात सिदक़-ए-दिल से मांगी हुई दुआ वह रद्द नहीं करता बल्कि स्वीकार फ़रमाता है। (तिरमिज़ी पुस्तक अल् दावात)

इसके बाद प्रिय मनाहिल नसीम ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निमंलिखित इक़तेबास प्रस्तुत किया

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"याद रखो कोई आदमी कभी दुआ से फ़ैज़ नहीं उठा सकता जब तक वह सब्र में हद न कर दे और इस्तक़लाल के साथ दुआओं में न लगा रहे। अल्लाह तआला पर कभी बदज़नी और बद गुमानी न करे। उस को समस्त क़ुदरतों और इरादों का मालिक कल्पना करे। विश्वास करे फिर सब्र के साथ दुआओं में लगा रहे। वह समय आ जाएगा कि अल्लाह तआला उसकी दुआओं को सुन लेगा और उसे उत्तर देगा। जो लोग इस नुस्ख़ा को प्रयोग करते हैं वह कभी बदनसीब और वंचित नहीं हो सकते बल्कि निश्चित वह अपने उद्देश्य में सफ़ल होते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2, पृष्ठ 2003)

आप मज़ीद फ़रमाते हैं :

"अल्लाह तआला स्वीकृत दुआ में हमारे अंदेशा और इच्छा के अधीन नहीं होता है। देखो बच्चे किस क़दर अपनी माओं को प्यारे करते हैं और वह चाहती है कि उनको किसी किस्म की तकलीफ़ न पहुंचे। परन्तु यदि बच्चे बेहूदा तौर पर इसरार करें और रो कर तेज़ चाक़ू या आग का रोशन और चमकता हुआ अँगारा मांगें तो क्या माँ अतिरिक्त सच्ची मुहब्बत और हक़ीक़ी दिलसोज़ी के कभी गवारा करेगी कि उसका बच्चा आग का अंगारा लेकर हाथ जलाले या चाक़ू की तेज़ धार पर हाथ मारकर हाथ काट ले? कदापि नहीं इसी उसूल से इजाबत-ए-दुआ का उसूल समझ सकते हैं। मैं स्वयं इस अमर में एक अनुवभ रखता हूँ कि जब दुआ मे कोई भाग हानिकारक होता है तो वह दुआ कदापि स्वीकार नहीं होती है। (मलफ़ूज़ात भाग अव्वल, पृष्ठ 127 ऐडीशन 2003)

इसके बाद हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का मंजूम कलाम "कुछ दुआ के सम्बन्ध में" प्रिय सलमा बुशरा गैसलर ने पढ़ कर सुनाया।

इसके बाद प्रिय मलीहा अहमद , अत्यातुल करीम, हिबातुल नूर, दानिया अहमद चठ्ठा और प्रिय ख़ुंसा नवीद ने मिलकर स्वीकृत दुआ की शरायत" के शीर्षक से निमंलिखित मज़मून प्रस्तुत किया

इताअत

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह

यदि किसी अहमदी को मन्सब-ए-ख़िलाफ़त का सत्कार नहीं है, इस से सच्चा प्यार नहीं है, इस से इशक़ का सम्बन्ध नहीं है और केवल अपनी आवश्यकता के समय वह दुआ के लिए हाज़िर होता है उस की दुआएं स्वीकार नहीं की जाएँगी। अर्थात समय के ख़लीफा की दुआएं उसके लिए स्वीकार नहीं की जाएँगी । इसी के लिए स्वीकार की जाएँगी जो विशेष इख़लास के साथ दुआ के लिए लिखता है और इस का अनुकरण साबित करता है कि वह हमेशा अपने अह्द पर क़ायम है कि जो नेक काम आप मुझे फ़रमाएँगे उनमें में आपकी इताअत करूंगा। ऐसे मुतीअ बंदों के लिए तो कई दफ़ा हमने ये नज़्ज़ारे देखे। एक दफ़ा नहीं बसाऔक़ात ये नज़्ज़ारे देखे कि वहां पहुंची भी नहीं दुआ फिर भी स्वीकार हो गई। अभी लिखी जा रही थी दुआ

तो अल्लाह इस पर प्यार की नज़र डाल रहा था और वह दुआ स्वीकार हो रही थी। कई दफ़ा दुआ बनी भी नहीं तो वह दुआ स्वीकार हो जाती है। इस लिए यह ऐसा एक बुनियादी उसूल है जिसको हमेशा प्रत्येक अहमदी को पेश-ए-नज़र रखना चाहिए। यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद सच्चे दिल और प्यार से भेजता है और वफ़ा का सम्बन्ध है अपने महबूब आक़ा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सारी दुआएं हमेशा के लिए ऐसे उम्मतीयों के लिए सुन्नी जाएँगी। और यदि वह ख़िलाफ़त से ऐसा सम्बन्ध रखता है और पूरी वफ़ादारी के साथ अपने अह्द को निभाता है और इताअत की प्रयास करता है तो उसके लिए भी दुआएं सुनी जाएँगी बल्कि उनकी दुआएं भी सुनी जाएँगी। इसके दिल की कैफ़ीयत ही दुआ बन जाया करेगी

(ख़ुतबा जुमा 16 जुलाई 1982)

हक़ूकुल अल् इबाद

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ की स्वीकार्यता का एक महत्वपूर्ण राज़ ये वर्णन फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के बंदों पर यदि कोई एहसान मुरव्वत और रहम करे तो अल्लाह तआला भी उस पर रहम करता है। तो दुआओं की स्वीकार्यता का एक तरीक़ यह भी है। दुआ करने से पहले कोई ऐसा व्यक्ति तलाश करना चाहिए जो किसी मुसीबत और तकलीफ़ में हो। चाहे वह तकलीफ़ जानी हो या माली, इज़्ज़त की हो या आबरू की। किसी किस्म की हो। तुम प्रयास करो कि दूर हो जाए। आगे दूर हो या न हो तुम उसके ज़िम्मेदार नहीं हो तुम अपनी हिम्मत और प्रयास के अनुसार ज़ोर लगा दो उसके बाद ख़ुदा तआला के हुज़ूर जाओ और जाकर अपने काम के लिए दुआ करो। इस तरीक़ की दुआ बहुत हद तक स्वीकार हो जाएगी।

तुम ख़ुदा तआला के किसी बंदे की तकलीफ़ को दूर करने के लिए जिस क़दर ध्यान करोगे ख़ुदा तआला तुम्हारी तकलीफ़ दूर करने के लिए इस से बहुत ज़्यादा ध्यान फ़रमाएगा।

(ख़ुतबा जुमा 28 जुलाई 1916 ई.)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह ख़ुतबा जुमा 12 अगस्त 1994 ई. में वर्णन फ़रमाते हैं :

"असल बात यह है कि जो लोग ख़ुदा के बंदों की सहायता में रहते हैं। दुआ न भी करें तो अल्लाह उनकी सहायता करता रहता है और जो अपने भाईयों, अपने क़रीबियों के हाल से ग़ाफ़िल रहें। चाहे माली नुक़्सान न भी करें, बददियानती से न भी पेश आएं परन्तु उनके ग़म केवल अपनी ज़ात के लिए हों, अपने अज़ीज़ों के लिए न हों, अपने करीबीयों के लिए न हों, उनकी दुआएं भी इसी हद तक कमज़ोर हो जाती हैं। अतः दुआओं की स्वीकार्यता का गहरा राज़ इस मज़मून में है कि जो बंदों पर रहम नहीं करता। अल्लाह तआला उस से रहम का व्यवहार नहीं फ़रमाता और उस की दुआएं स्वीकार नहीं फ़रमाता।"

तहारत और पाकीज़गी

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"दुआ की स्वीकार्यता के लिए यह भी याद रखो कि दुआ करने से पहले अपने कपड़ों और बदन को साफ़ करो। गौहर एक दुआ करने वाला नहीं समझता और न महसूस करता है परन्तु जो महसूस करते या कर सकते हैं उनका अनुवभ है कि जब इन्सान दुआ करता है तो उसे ख़ुदा तआला का एक क़ुरब प्राप्त हो जाता है और उसकी रूह अल्लाह तआला के हुज़ूर खींची जाती है। चूँकि रूह की सफ़ाई शरीर की सफ़ाई से सम्बन्ध रखती है और रूह की नापाकी शरीर की नापाकी से। इस लिए यदि शरीर नापाक हो तो रूह पर भी इसका नापाक ही प्रभाव पड़ता है। और यदि शरीर पाक हो तो रूह पर भी इस का पाक ही प्रभाव पड़ता है। यह कारण है कि इस्लाम ने समस्त इबादतों के लिए सफ़ाई की शर्त ज़रूरी क़रार दी है। सूफ़ियों ने दुआएं करने के कपड़ों अलग बना रखे होता है जिसे ख़ूब साफ़ सुथरा रखते और खूशबूएं लगाते हैं। तो दुआ के स्वीकार होने का यह भी एक तरीक़ है कि दुआ करने से पहले इन्सान अपने कपड़ों को साफ़ सुथरा करले। इस तरह दुआ ज़्यादा स्वीकार होती है।

(ख़ुतबा फ़र्मूदा 28 जुलाई 1916)

सब्र और अस्तग़फ़ार

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

जब हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवन पर नज़र करते हैंतो हमें मालूम होता है कि आपके चलने फिरने, उठने बैठने, खाने पीने, नमाज़ के अदा करने, सौदा सलफ़ लाने, बातचीत करने, उद्देश्य यह कि प्रत्येक की आरंभ दुआ ही से है। अतः याद रखो कि मुज़्तर की संतुष्टि का कारण और कमज़ोर तबा की ढारस यही दुआ है दुआ के साथ ख़ुदा तआला ने सब्र की भी शिक्षा दी है क्योंकि कभी कबार मस्लहत-ए-इलाही से जब दुआ की स्वीकार्यता में देर होती है तो इन्सान अल्लाह तआला पर गुमान करने लगता है और नफ़्स-ए-दुआ की निसबत उसे शकूक और शुबहात पैदा हो जाते हैं। इस लिए इस्तक़लाल और जनाब-ए-इलाही पर हुस्न-ए-ज़न रखे।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद फ़रमाते हैं :

"दुआ और इस्तग़फ़ार और लाहौल से काम लो। पाक लोगों की सोहबत में रहो। अपनी इस्लाह की फ़िक्र में मुज़्तर की तरह लगे रहो कि मुज़्तर होने पर ख़ुदा रहम करता है और दुआ को स्वीकार करता है।" (ख़ुतबा ईद फ़ितर तारीख़ 9 दिसंबर 1904)

अल्लाह तआला हमें अपने हुज़ूर आजिज़ाना दुआओं की तौफ़ीक़ दी और शरफ़-ए-स्वीकार्यता प्रदान फ़रमाए। आमीन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने ख़ुतबा जुमा 23 मई 2014 ई. में दुआओं और सब्र की तलक़ीन करते हुए फ़रमाते हैं :

"प्रत्येक मर्तबा जब हम इबतिला और इम्तहानों के दौर से गुज़रते हुए अल्लाह के आगे झुकते हुए उस की सहायता मांगते हैं तो प्रगति के नए से नए रास्ते हमारे सामने खुलते चले जाते हैं। हमारे साथ संसार वालों के मज़ालिम और तंगीयाँ वारिद करने और जान, माल समय और इज़्ज़त की क़ुर्बानी के मुक़ाबले पर सब्र दिखाने और ख़ुदा तआला के आगे झुकने के परिणाम में ख़ुदा तआला की ओर से इनामात के मिलने और फ़त्हा नसीब होने के इलाही वादे हैं जिनके हुसूल का बेहतरीन नुस्ख़ा दुआ है। यदि प्रत्येक अहमदी ख़ुदा तआला पर इन्हिसार की वास्तविकता को समझ कर इस पर अनुकरण करना शुरू कर दे तो जहां-जहां भी अहमदियों पर तंगीयाँ वारिद की जा रही हैं वह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुआओं से ही हवा में उड़ जाएँगी।" इन शा अल्लाह।

इसके बाद प्रिय अतिया रहमान, नाइमा नायाब मिर्ज़ा, दानिया अफ़ज़ल, नायला मलिक, और मारिया गैसलर ने एक ग्रुप की सूरत में तराना "नए अज़म" प्रस्तुत किया।

उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने जायज़ा लिया कि12 से 15 वर्ष तक की कितनी लड़कियां हैं और इससे अधिक आयु की कितनी हैं। और यह कि Gymnasium क्लास में कितनी पढ़ रही हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वाकिफ़ात नौ विद्यार्थियों को प्रश्न करने की आज्ञा अता फ़रमाई।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने कहा कि हुज़ूर सबसे पहले आपको प्यारी आपा जान को मुबारक हो कि अलहमदु लिल्लाह अल्लाह तआला ने आपको पोते से नवाज़ा है।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जज़ाकमुल्लाह फिर उस वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि जो आईने में देखने वाली दुआ है कि इस में यह हैकि हमारे सुन्दर चेहरे के साथ हमारे अख़लाक़ भी सुन्दर बनादे। तो मेरा प्रश्न यह है कि कुछ ऐसे भी होते हैं जिनको अपना चेहरा सुन्दर नहीं लगता। इन के लिए क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तो जैसा अल्लाह तआला ने बनाया है अल्लाह तआला का शुक्र कर लिया करें कि यह अल्लाह तआला ने बनाया है कि इस से ज़्यादा बुरा नहीं बनाया। एक दफ़ा बाज़ार में एक व्यक्ति खड़ा था और इसके चेहरा की कोई सुन्दरता नहीं थी। उस को लोग अच्छा नहीं समझते थे। उस को स्वयं भी एहसास था कि मेरे चेहरे पर कोई सुन्दरता नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पीछे से गए और उसके गले में हाथ डाल कर उसको पीछे से पकड़ लिया उसकी आँखें बंद करके खड़े हो गए। उसने ख़ूब अपना शरीर रगड़ना शुरू किया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह मेरा खास आदमी है इस का कौन ख़रीदार है। इस पर उसने कहा मेरा इस बदशकल आदमी का और किसी काम के न आदमी का कौन ख़रीदार हो सकता है? कौन मुझे पसंद कर सकता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा नहीं मुझे तुम बहुत पसंद हो। तो यदि किसी का चेहरा ऐसा है और अल्लाह तआला ने यदि ऐसा बनाया हुआ है तो फिर उसी पर ख़ुश हो जाएगी कि इस से भी भयानक चेहरा हो सकता था। जो अल्लाह तआला ने दिया है वही अच्छा है शुक्र करना चाहिए शुक्र करोगे तो अल्लाह तआला मज़ीद देता जाएगा।

एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि हम नमाज़ में लज़्ज़त कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर ने फ़रमाया :

नमाज़ के तुम्हें अर्थ आने चाहिऐं। सोच सोच के पढ़ो। जो अरबी के शब्दों हैं उन्हें ग़ौर से पढ़ो फिर सज्दे में जब जाते हो तो अपनी भाषा में दुआ करो। रुकवा में जाते हो अपनी भाषा में दुआ करो। और जो प्रत्येक की कोई न कोई विशेष चीज़ होती है जिस के लिए इस को दिल में दर्द होती है। उस को सोचो और दिल में लाओ। स्टूडैंट हैं तो उनको यही होता है कि हम पास हो जाएं तो एक दम फ़िक्र पैदा होती है। फिर अल्लाह तआला के आगे झुकते हैं। हमारे परीक्षा हैं पास हो जाएं। इस में वह लज़्ज़त आनी शुरू होती है। फिर आदमी रोता है चिल्लाता है तो वही मज़ा आता है इसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता आदत पड़ती चली जाती है। फिर जिस तरह अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा करने की सोच बढ़ती है । फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत प्राप्त करने के लिए इन्सान प्रयास करता है रोता है चिल्लाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि तुम नमाज़ में और कुछ नहीं और ऐसी हालत पैदा होती नहीं तो रोनी शक्ल बना लिया करो। चाहे ज़बरदस्ती बनाओ क्योंकि रोनी शक्ल बनाके कई दफ़ा रोना आजाता है फिर इस में इन्सान आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ता जाता है। दुआ करो जो दुआ दर्द से हो सोच समझ के हो तो फिर लज़्ज़त आती है। दुआ होनी चाहिए तो दिल से होनी चाहिए। और जब दिल से निकलती है तो लज़्ज़त भी आने लग जाती है।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि जो वक़्फ़ नू नहीं होतीं उनमें से कुछ का जो वक़्फ़ नौ होने का दिल चाहता है। वह क्या करें

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उनके माँ बाप को अपने इस बच्चे को पहले वक़्फ़ करना चाहिए था जिन्होंने अपने बच्चों को वक़्फ़ किया इस लिए किया कि वे दीन की सेवा कर सकें। इस लिए वक़्फ़ किया कि बच्चे बड़े होके ज्ञान प्राप्त करके दीन की सेवा करें। कोई डाक्टर बन के दीन की सेवा कर सकता है। कोई टीचर बन के कोई ज़बानें सीख के। अब अपने आपको वक़्फ़ कर दो और दीन की सेवा के लिए लग जाओ तो वही वक़्फ़ हो जाएगा। अल्लाह तआला ने यह तो नहीं लिखा हुआ कि जो वक़्फ़ नौ में है मैं उसी का वक़्फ़ स्वीकार करूंगा और बाक़ीयों की नहीं करूंगा। संसार में बहुत से इन्सान ऐसे हैं जो दीन की सेवा कर रहे हैं। वह वक़्फ़ नौ तो नहीं हैं। हमारे ज़माने में वक़्फ़ नौ की स्कीम नहीं थी तो हम भी तो वक़्फ़ थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यदि तुम वक़्फ़ नौ का टाइटल लगा लो और नमाज़ तुम नियमित नहीं पढ़ती हो क़ुरआन शरीफ़ तुम नहीं पढ़ती हो, दीन की सेवा का भवना न हो और कहो कि मैं वक़्फ़ नौ हूँ तो इस का कोई लाभ नहीं। यह तुम्हारा कोई वक़्फ़ नहीं। अल्लाह के निकट स्वीकार ही नहीं होगा। एक दूसरी लड़की है जो वक़्फ़ नौ नहीं है वह नमाज़ें भी पढ़ती है क़ुरआन भी पढ़ती है। दीन का इल्म भी प्राप्त करती है सेवा भी करती है वह तो वक़्फ़ नौ से ज़्यादा है।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि बच्चे को जन्म से पहले क्यों वक़्फ़ करते हैं उसके बाद क्यों नहीं कर सकते?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जन्म के बाद वक़्फ़ करने से किस ने रोका है। किसी ने नहीं रोका। वक़्फ़ नौ स्कीम जो है वह हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने शुरू की थी और वह इस लिए थी कि माँ बाप जन्म से पहले हज़रत मर्यम की माता का जो उस्वा है और उनकी दुआ है उस को मांगते हुए अपने बच्चे को जन्म से पहले वक़्फ़ करें और जन्म के इस उसके लिए दुआ करते रहें कि अल्लाह तआला उनको जो बच्चा प्रदान फ़रमाए वह दीन का ख़ादिम हो और फिर जब वह बच्चा पैदा हो जाए तो फिर उसके लिए नियमित दुआएं करते रहें और फिर उस की तर्बीयत भी इस दृष्टि से हो कि वह दीन की सेवा करने वाला बन सके। बाक़ी यह है कि जन्म के बाद यदि माँ बाप अच्छी तर्बीयत करते हैं अपने बच्चे वक़्फ़ करते हैं बहुत सारे वक़्फ़ जीवन हैं जो वक़्फ़ नौ नहीं हैं परन्तु जामिया में भी पढ़ रहे हैं और नियमित वक़्फ़ करके जामिया में पढ़ते हैं और कुछ जमाअत में दूसरी ख़िदमात बजा ला रहे हैं।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि मेरी एक मित्र है उसने कहा था कि हम आले सल्लाह की अँगूठी इन दो उंगलीयों में नहीं पहन सकते। क्योंकि जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मन थे वह इन दो उंगलियों में पहनते थे। तो मेरा प्रश्न है कि हम कौन सी उंगली में पहनें।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जिस उंगली में पूरी आती है पहन लिया करो। किसी ने नहीं रोका। बाज़ों को मैं अँगूठीयां देता हूँ तो जिनकी उंगलियां बड़ी होती हैं तो मैं उनको कहता हूँ कि यही पहन लो जिस उंगली में भी आती है। ऐसे ही कहानियां बनाई हुई हैं। अल्लाह की ख़ातिर गवाही देते हो तो यह उंगली उठाते हो। इस उंगली की एहमीयत इतनी है कि अल्लाह को गवाह ठहराने के लिए तुम उसको उठाते हो तो अल्लाह का नाम यहां नहीं रख सकते। यह अजीब है।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि हुज़ूर अनवर ने कल हमारी मस्जिद दारुल अमान का उद्घाटन फ़रमाया था। तू मेरा प्रश्न था कि यदि इमाम साहब मुर्दों वाली साईड पर नमाज़ पढ़ा रहे हैं तो महिलाओं वाली साईड पर यदि आवाज़ आनी बंद हो जाए तो इस सूरत में हम क्या कर सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अपनी अपनी नमाज़ पढ़ लो। तथा फ़रमाया कि तुम्हारी मस्जिद में तो महिलाओं का हिस्सा एक स्क्रीन लगाकर बनाया गया है इस लिए यदि आवाज़ बंद भी हो जाएगी तो तब भी आही जाएगी

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि एक वक़्फ़ नौ बच्ची पुलिस में जा सकती है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमें पुलिस में वाकिफ़ा नौ की आवश्यकता नहीं है। अहमदी ऐसे जुर्म करते ही नहीं कि पुलिस में इस की आवश्यकता हो। जब तुम पुलिस में जाओगी तो पुलिस के लिए अलग अलग ट्रेनिंग कॉलेज तो कोई नहीं है। तुम्हें मर्दों के साथ ही ट्रेनिंग लेनी पड़ेगी। वहीं रहना पड़ेगा वहीं ट्रेनिंग करनी पड़ेगी उन्हीं का कपड़ों पहनना पड़ेगा। वह यूनीफार्म पहनना पड़ेगा न तुम्हारा पर्दा रहेगा न हिजाब रहेगा न हया रहेगी। इस लिए केवल वक़्फ़ नौ का प्रश्न नहीं है किसी भी अहमदी लड़की को पुलिस में जाने की आवश्यकता नहीं है।

ज़ईक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि हुज़ूर अपनी तक़रीरें स्वयं लिखते हैं या किसी से लिखवाते हैं?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया में अपनी तक़रीरें स्वयं लिखता हूँ तैयार करता हूँ और किसी दूसरे को इस का ज्ञान तक भी नहीं होता। मैं तो आख़िरी समय में मज़मून लिख के ले जा रहा होता हूँ। या मैं केवल नोटिस ले के जाता हूँ और वहीं तक़रीर के मज़मून बनता है। वह मेरे नोटिस मेरे अतिरिक्त कोई पढ़ भी नहीं सकता। कोई दूसरा तक़रीर लिख के मुझे दे ही नहीं सकता। अतिरिक्त उसके कि मैं जो कुछ पुस्तकों के हवाले होते हैं वह मैं निकाल के देता हूँ प्राईवेट सेक्रेटरी साहब को कि ये ये हवाले पुस्तक में से प्रिंट करके मुझे दे दो बल्कि कई दफ़ा में प्रिंट भी नहीं करवाता वह पुस्तकों के हवाले भी अपने हाथ से स्वयं ही लिख लेता हूँ।

शेष आगे ..

★ ★ ★

तो फिर आप देखेंगे कि आप लोग इन्क़िलाब लाने वाले भी बन जाऐंगे इन शा अल्लाह तआला। और मुझे उम्मीद है कि इन शा अल्लाह नौजवान मुरब्बियान अगर एक अज़म से उट्ठेंगे तो एक इन्क़लाब पैदा हो सकता है। क्योंकि आप लोग यहां के माहौल में पले बढ़े हैं। पहले तो होता था कि कोई पाकिस्तान से आया, कोई बाहर से मुरब्बियान आए, उनको सही तरह से पता नहीं था, ज़बान पर पूरी तरह गिरिफ़्त नहीं थी। आपको तो ज़बान पर भी पूरी तरह grasp है, comprehension है और इसको आप अच्छी तरह अदा कर सकते हैं। यहां के माहौल में रहे हुए हैं, माहौल का भी पता है। इसी तरह आप लोग ख़ुद नए रास्ते explore करें कि किस तरह हमने उनकी तर्बीयत करनी है, किस तरह उनको attach करना है, किस तरह हमने नई नसल को ज़ाए होने से बचाना है।

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात तिथि 15 नवंबर 2020 ई. में एक मुरब्बी साहिब ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि कुछ दूसरी कौमें जो जमाअत अहमदिया में शामिल हो रही हैं, वे जमाअत के इलमो कलाम से तो बहुत प्रभावित होती हैं लेकिन जमाअती निज़ाम और ख़ुसूसन माली क़ुर्बानी में वे पूरी तरह शामिल नहीं हो पातीं और मुक़ामी जमाअत के साथ भी उनके मुस्तहकम राबते नहीं हो पाते, इस बारे में हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में राहनुमाई की दरख़ास्त है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जवाब बात यह है कि जमाअती निज़ाम को भी उन के लिए इतना मुश्किल न करें। इसी लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह ने यही कहा था, और उनसे पहले भी खलिफ़ा यही कहते रहे और मैं भी यही कहता हूँ कि जो नए आने वाले नौ मुबाईन हैं वे जब आते हैं और आपके साथ शामिल होते हैं तो उनको पहले तीन साल के अरसा में समझाएँ कि सिस्टम क्या है न कि उनसे इस तरह सुलूक करें कि वे कोई वलीउल्लाह हैं या सहाबा की औलाद में से हैं या पैदाइशी अहमदी हैं। पैदाइशी अहमदी तो बल्कि कम जानते हैं वे जो नए आने वाले हैं वे दीनी इलम भी आपसे ज़्यादा जानते हैं। अक्सर मैंने देखा है जो सही तरह सोच समझ के जमाअत में शामिल होता है वे नमाज़ों की तरफ़ भी तवज्जा देने वाला ज़्यादा होता है, वे इस्तग़फ़ार करने वाला भी होता है, वे तहज्जुद पढ़ने वाला भी होता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को समझने की कोशिश भी करने वाला होता है। तो बहरहाल हमारा यह काम नहीं कि जो भी शामिल होता है इस को पहले दिन से ही (तमाम चीज़ों पाबंद) न करें। इसी लिए तीन साल के लिए उनके ऊपर चंदा का निज़ाम लागू नहीं किया जाता है। तीन साल का अरसा उनकी ट्रेनिंग का होता है ताकि इस में तर्बीयत हो जाएगी। उनको बताएं कि यह जमात का निज़ाम है लेकिन तुम अभी नए हो तुम इसको पहले ग़ौर से देखो, समझो। लेकिन फिर मसलन माली क़ुर्बानी है, अल्लाह तआला ने क्योंकि माली क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा दिलाई है तो तुम वक़्फ़ जदीद और तहरीक जदीद का चंदा जो है इस में जितनी तुम्हारी हैसियत है तुम दे सकते हो चाहे साल का एक यूरो दो ताकि तुम्हें एहसास पैदा हो कि जमाअत से तुम्हारी कोई attachment है। इसी तरह नमाज़ों के बारे में उनको बताएं कि नमाज़ सीखो।अब जब ग़ैर मुस्लिमों से एक मुस्लमान होता है, अहमदी मुस्लमान होता है। इस को सूरत फ़ातिहा सिखानी शुरू करें। जब उसको सूरत फ़ातिहा आ जाए, याद हो जाए। तो जब नमाज़ उसने पढ़नी है तो नमाज़ के फ़रायज़ उसको बताएं कि देखो अल्लाह तआला ने नमाज़ फ़र्ज़ की है। पहली बुनियादी चीज़ तो नमाज़ हैं नां? तो नमाज़ अल्लाह तआला ने जब फ़र्ज़ की है तो इस में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूरत फ़ातिहा पढ़नी ज़रूरी है। नमाज़ की जो बुनियादी चीज़ है वह सूरत फ़ातिहा है। और सूरत फ़ातिहा के बग़ैर नमाज़ नहीं होती इसलिए उस को पहले सूरत फ़ातिहा याद कराईं। फिर उसको कहें कि अच्छा तुम तर्जुमा याद करो। या उसे कह दें कि तुम तर्जुमा याद कर लो ताकि जो बिलजहर नमाज़ें हैं उनमें जब इमाम सूरत फ़ातिहा पढ़ रहा है तो साथ साथ तुम्हें दिल में पता लगता रहे कि इमाम क्या पढ़ रहा है। फिर उसको ख़ुद शौक़ पैदा होगा कि सूरत फ़ातिहा याद कर ले। यहां कई अंग्रेज़ अहमदी हुए हैं मैं ने उनको देखा है कि उन्होंने बड़े शौक़ से उसे याद किय। या किसी भी मुल्क के मेरे से जो कोई भी मिलते हैं उनको जब मैं कहता हूँ तो वे सूरत फ़ातिहा याद करते हैं और बड़ी अच्छी तरह अल्लाह के फ़ज़ल से याद कर लेते हैं और समझते भी हैं। तो तीन साल का अरसा उनको एक ट्रेनिंग देने का अरसा है। जब उनकी तीन साल में वे ट्रेनिंग हो जाएगी तो फिर उनको जमाअत के सिस्टम में integrate होना मुश्किल नहीं लगेगा।

अगर आप पहले दिन से उनसे तवक़्क़ो रखें कि वे वलीउल्लाह बन जाएं तो वे नहीं हो सकता। (ये तवक़्क़ो रखना) फिर आप लोगों का क़सूर है। तीन साल का अरसा रखा ही इसलिए गया है कि न उनसे चंदा लेना है, न उनको ज़्यादा ज़ोर देना है। उनकी सिर्फ तर्बीयत करनी है कि जमात का निज़ाम क्या है। और उनके harshly तर्बीयत करनी है बल्कि प्यार से, मुहब्बत से समझाना है कि नमाज़ क्या चीज़ है? नमाज़ क्यों फ़र्ज़ है? नमाज़ पढ़ो। तुम एक नमाज़ पढ़ोगे, दो पढ़ोगे, तीन पढ़ोगे चार पढ़ोगे। जो पक्का मोमिन है इस पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और इस की वजूहात क्या हैं? नमाज़ जब पढ़ते हैं इस की हिक्मत क्या है? तो इल्मुल कलाम से जो मुतास्सिर होते हैं उनको फिर नमाज़ की हिक्मत समझाएँ। अगर इस में इतनी अक़ल है कि इस को इल्मुल कलाम की बातें पता लग गईं। फ़लसफ़ा पता लग गया। गहराई पता लग गई। तो फिर उसको यह कहना कि नमाज़ नहीं पढ़ोगे तो जहन्नुम में चले जाओगे। यह नहीं कहना उसको। उसको प्यार से ये कहें कि नमाज़ की हिक्मत क्या है। पाँच नमाज़ें क्यों फ़र्ज़ की गई हैं। जब उसको हिक्मत समझ आ जाएगी तो आपसे ज़्यादा नमाज़ें पढ़ने लग जाएगा। मैं ने तो तजुर्बा करके यही देखा है। इसी तरह चंदा है। चंदे की हिक्मत क्या है? और अल्लाह तआला पर ईमान की हिक्मत क्या है? तो सिर्फ इल्मुल कलाम से मुतास्सिर होना बात नहीं है इस इल्मुल कलाम को ही ले के आगे उसको हिक्मत समझाएँ। जिस इल्मुल कलाम से वे मुतास्सिर हुए हैं उसी इल्मुल कलाम को ज़रीया बनाएँ। उदाहरणतः

"इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" है। लोग मुतास्सिर हो कर उसे पढ़ते हैं। अब "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही अल्लाह तआला के वजूद का पता लग जाता है। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही इबादत की हक़ीक़त पता लग जाती है। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही क़ुर्बानी का मयार पता लग जाता है। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही जन्नत और दोज़ख़ का नज़रिया पता लग जाता है। तो ये सारी चीज़ें जब उनके इल्मुल कलाम से ही उनको समझाएँगे तो उनको समझ आ जाएगी। तो आप जो बात कर रहे हैं इस की दलील तो आपके पास ख़ुद मौजूद है उसी दलील को इस्तिमाल करें।

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

तुमने उस निज़ाम की पाबंदी की कसमें खाई हैं। अब उसकी पाबंदी करते रहना अन्यथा नतीजा यह होगा कि तुम्हारी क़ुर्बानियों से जो रोब इस्लाम का क़ायम हुआ है वह जाता रहेगा और फिर नए सिरे से मेहनत करनी पड़ेगी। यह एक बहुत बड़ा सयासी नुक्ता बताया है। चंद आदमियों के झगड़ों से सब निज़ाम बर्बाद हो जाता हैऔर क़ौम की मेहनत व्यर्थ हो जाती है और नए सिरे से मेहनत और क़ुर्बानी की ज़रूरत पेश आती है। परन्तु उधड़ी हुई चीज़ फिर इस तरह नहीं जुड़ती जैसे कि नई। और फटे हुए दिल फिर इस तरह नहीं मिलते जिस तरह कि वे जो हमेशा मुत्तसिल रहे। इस लिए इस अह्द के क़ियाम के लिए निहायत सख़्त कोशिश करने की ज़रूरत होती है।

इस आयत के शब्दों से यह भी मालूम होता है कि इस में ग़ैर क़ौमों के साथ मुआहिदात का भी वर्णन है। इस मज़मून के लिहाज़ से इस आयत को एक मुस्तक़िल मज़मून क़रार देना होगा। لَا تَكُوْنُوْا سے नया मज़मून शुरू समझा जाएगा और मतलब यह होगा कि जिस तरह अल्लाह तआला के अह्द और अपने अंदरूनी अह्द की पाबंदी लाज़िमी है इसी तरह दूसरी अक़्वाम के साथ जो अह्द किए गए हों उनकी पाबंदी भी ज़रूरी है। इन मुआहिदात की निगहदाशत रखो अन्यथा दुनिया का अमन बर्बाद हो जाएगा। इसलिए دَخَلًا का शब्द भी इसी बात को ज़ाहिर करता है और كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ से भी यही मुराद है कि अमन के क़ायम होने के बाद फ़साद की सूरत पैदा न करो।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 229 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 25 August - 1 September 2022 Issue No. 34-35

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 01 का शेष

क़ुर्बानियों से जो रोब इस्लाम का क़ायम हुआ है वह जाता रहेगा और फिर नए सिरे से मेहनत करनी पड़ेगी। यह एक बहुत बड़ा सयासी नुक्ता बताया है। चंद आदमियों के झगड़ों से सब निज़ाम बर्बाद हो जाता हैऔर क़ौम की मेहनत व्यर्थ हो जाती है और नए सिरे से मेहनत और क़ुर्बानी की ज़रूरत पेश आती है। परन्तु उधड़ी हुई चीज़ फिर इस तरह नहीं जुड़ती जैसे कि नई। और फटे हुए दिल फिर इस तरह नहीं मिलते जिस तरह कि वे जो हमेशा मुत्तसिल रहे। इस लिए इस अह्द के क़ियाम के लिए निहायत सख़्त कोशिश करने की ज़रूरत होती है।

इस आयत के शब्दों से यह भी मालूम होता है कि इस में ग़ैर क़ौमों के साथ मुआहिदात का भी वर्णन है। इस मज़मून के लिहाज़ से इस आयत को एक मुस्तक़िल मज़मून क़रार देना होगा। لَا تَكُوْنُوْا से नया मज़मून शुरू समझा जाएगा और मतलब यह होगा कि जिस तरह अल्लाह तआला के अह्द और अपने अंदरूनी अह्द की पाबंदी लाज़िमी है इसी तरह दूसरी अक़्वाम के साथ जो अह्द किए गए हों उनकी पाबंदी भी ज़रूरी है। इन मुआहिदात की निगहदाशत रखो अन्यथा दुनिया का अमन बर्बाद हो जाएगा। इसलिए دَخَلًا का शब्द भी इसी बात को ज़ाहिर करता है और كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ से भी यही मुराद है कि अमन के क़ायम होने के बाद फ़साद की सूरत पैदा न करो।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 229 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

वैक्सीन अगर गर्वनमैंट लगाती है तो लगा लेनी चाहिए, कोई हर्ज नहीं है
अभी तक जो मैंने रिसर्च की है और करवाई है, हमारे मुख़्तलिफ़ अहमदी जो इस फ़ील्डके स्पैशलिस्ट हैं
उनसे भी पता करवाया है अमरीका से लेकर यहां तक सब का ख़्याल है कि (वैक्सीन) करवाने में कोई हर्ज नहीं है
ऐसे दोस्त बनाओ जो अच्छे हों,अच्छी बातें करने वाले हों, पढ़ाई की बातें करने वाले हों, नेक बातें करने वाले हों
जब तुम्हें ग़ुस्सा आए तो ठंडा पानी पी लिया करो और बैठ जाया करो, अल्लाह तआला से दुआ किया करो कि वे तुम्हारे ग़ुस्सा को दूर कर दे, तुम्हें ग़ुस्सा आए तो
अल्लाह तआला से माफ़ी मांगनी शुरू कर दिया करो

अमीरुल मोमेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मज्लिस अत्फालुल अहमदिया जर्मनी की (ऑनलाइन मुलाक़ात)

तिथि 28 अगस्त 2021 ई. को मज्लिस अतफ़ालुल अहमदिया जर्मनी के मैंबरान को अपने प्यारे आका हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से ऑनलाइन मुलाक़ात सआदत नसीब हुई। हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर इस्लामाबाद (टिलफ़ोरड) में पधारे जबकि 1000 से ज़ायद अत्फ़ाल ने इस ऑनलाइन मुलाक़ात में (maimarkclub) mannheim से शिरकत की। प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ, जिसके बाद मैंबरान मजलिस अत्फ़ाल अहमदिया को हुज़ूर अनवर से बराह-ए-रास्त चंद सवालात पूछने का अवसर मिला। ख़ुद्दाम अहमदिया जर्मनी की गुज़श्ता ऑनलाइन मुलाक़ात के दौरान बारिश होती रही थी, जिसके हवाला से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि (अत्फ़ाल) को आज हाल में बिठाया हुआ है, बारिश का एक तजुर्बा जो आप ने ख़ुद्दाम के साथ कर लिया है। वैसे तो ये भी माशा अल्लाह मुजाहिद हैं, आजकल (ख़ुतबात में) बदरी सहाबा का वर्णन हो रहा है, तो वहां आंधी भी आई होगी, बारिश भी हो गई लेकिन वहा 13 या 14 साल के लड़के ही थे नाँ जो वहां क़ायम भी रहे। तो फ़िक्र न करो, ये हमारे अत्फ़ाल भी सारे माशा अल्लाह मुजाहिद ही हैं। लेकिन अच्छा हुआ है उनको अंदर बिठा दिया है। ये मतलब नहीं कि बारिश में जा के बिठा दो।

* एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि प्यारे हुज़ूर जर्मनी में बारह साल से बड़े बच्चों को कोरोना वैक्सीन लगवाने की इजाज़त है। कुछ माहिरीन का कहना है कि यह लगवाना चाहिए लेकिन कुछ कहते हैं कि इस की ज़रूरत नहीं है। हुज़ूर आपकी इस हवाले से क्या हिदायत है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अच्छी बात है। अगर गर्वनमैंट लगाती है तो लगा लेनी चाहिए। कोई हर्ज नहीं है। क्या हर्ज है, protection ही है। अभी तक जो मैंने रिसर्च की है या करवाई है हमारे मुख़्तलिफ़ अहमदी जो इस फ़ील्ड के स्पैशलिस्ट हैं उनसे भी पता करवाया है, उन्होंने भी रिसर्च की है, पढ़े लिखे लोगों ने, डाक्टरों ने, अमरीका से लेकर यहां तक तो सारों का यह ख़्याल है कि (वैक्सीन) करवाने में कोई हर्ज नहीं है और जो लोग बताते हैं कि ये ये नुक़्सानात हैं वे मिलियनज़ में कहीं एक होता है। कोई इस तरह नहीं है कि हर एक नॉर्मल केस में इस तरह हो जाए, रिस्क तो हर जगह ही होता है। इसलिए अगर लगाते हैं तो मेरा ख़्याल है लगवा लेने में कोई हर्ज नहीं है ।

* फिर एक तिफ़्ल ने सवाल किया कि प्यारे हुज़ूर आप नए पैदा होने वाले बच्चों के नाम कैसे मुंतख़ब करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जब मुझे अल्लाह तआला ने इस मन्सब पर फ़ायज़ किया तो मैंने देखा कि ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने एक फाईल बनाई हुई थी इस में बच्चों के नाम थे और वे इस में से सिलेक्ट किया करते थे। जो आते थे तो उनमें से सिलेक्ट कर के बच्चों को बता दिया करते थे। फिर मैंने भी इस को जारी रखा और इस में मज़ीद नाम भी ऐड (add) करवाए उस को मज़ीद update क्या, कुछ नए नए नाम मेरे ज़हन में आए वे भी बीच में रखे तो एक फाईल बना ली है। जब मैं ख़ुद करता हूँ तो इस फाईल को देख के फिर बच्चों के नाम रख देता हूँ और बता देता हूँ। कोशिश यह होती है कि जो माँ बाप के नाम हैं ज़्यादा उनसे मिलते-जुलते नाम ही हों। लेकिन बाअज़ दफ़ा दूसरे नाम भी रखे जाते हैं। फिर हुज़ूर अनवर ने इस तिफ़्ल से पूछा कि इस का नाम किस ने रखा है तो उसने बताया कि हुज़ूर अनवर ने। इस पर हुज़ूर अनवर ने फिर इस्तिफ़सार फ़रमाया कि जाज़िब का क्या मतलब होता है तो इस तिफ़्ल ने उत्तर दिया कि जज़ब करने वाला। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हाँ absorb करने वाला। बस अल्लाह तआला की मुहब्बत को जज़ब करो, अल्लाह के रसूल की मुहब्बत को जज़ब करो और नेकियां बजा लाओ तब ही तुम्हारे नाम का सही पता लगेगा।

शेष आगे .....

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad